



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 183]

नई दिल्ली, मंगलवार, जुलाई 3, 2001/आषाढ़ 12, 1923

No. 183]

NEW DELHI, TUESDAY, JULY 3, 2001/ASADHA 12, 1923

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अन्तिम जांच-परिणाम

नई दिल्ली, 3 जुलाई, 2001

विषय :—जापान, कोरिया, यू. एस. ए., टर्की तथा ताइवान से स्टाइरिन बुटाडिन रबड़ (एसबीआर) के आयातों के संबंध में पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा अन्तिम जांच परिणाम

सं. 34/1/2000—डीजीएडी.—1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 तथा उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली 1995 को ध्यान में रखते हुए;

क. कार्य पद्धति

1. निम्नलिखित कार्य पद्धति अपनाई गई है:-

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) को नियमों के अधीन मै0 आटोमोटिव टायर मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (एटीएमए) और मै0 रिशीरूप पोलिमर्स प्रा0लि0 (जिन्हें इस अधिसूचना में याचिकाकर्ता कहा गया है) से जापान, कोरिया, यू0एस0ए0 टर्की और ताइवान (जिन्हें इसके बाद संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित स्टाइरिन बुटाडिन रबड़ (एसबीआर) (जिसे इसके बाद सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा के लिए निवेदन प्राप्त हुआ है।

(1)

समीक्षा की मांग करने के लिए मै0 एटीएमए की पात्रता संबंधी तर्कों पर विचार करते हुए प्राधिकारी नियम 2(ग) के तहत इसे उचित मानते हैं कि मै0 एटीएमए को समीक्षा की मांग करने के लिए एक पात्र पार्टी के रूप में मान्यता दी जाए ।

- (ii) याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर प्राधिकारी ने जापान, कोरिया, यू0एस0ए0, टर्की तथा ताइवान से एसबीआर के आयातों के विरुद्ध जांच समीक्षा शुरू करने का निर्णय किया । प्राधिकारी ने जापान, कोरिया, यूएसए, टर्की तथा ताइवान मूल के अथवा वहां से निर्यातित एस0बी0आर0 के आयातों के संबंध में पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा शुरू करते हुए तारीख 09.11.2000 को भारत के राजपत्र, असाधारण , में एक सार्वजनिक सूचना प्रकाशित की ।
- (iii) प्राधिकारी द्वारा दिनांक 02.06.99 की अधिसूचना के तहत पूर्ण की गई जांच का उल्लेख इस अधिसूचना में "पूर्ण जांच" के रूप में किया गया है;
- (iv) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) से समीक्षा अवधि के दौरान भारत में एसबीआर के आयातों का विवरण देने का अनुरोध किया गया था ।
- (v) प्राधिकारी ने उक्त नियम के उप-नियम 5(5) के अनुसार समीक्षात्मक जांच प्रक्रिया शुरू करने से पहले नई दिल्ली में सम्बद्ध देशों के दूतावासों को भी सूचित किया ।
- (vi) प्राधिकारी ने 9.2.2001 को सार्वजनिक सुनवाई की । मौखिक सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाले पक्षों को मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों को लिखित में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था । उक्त पार्टियों को विरोधी पार्टियों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों की प्रतियां लेने और उसका खंडन, यदि कोई हो, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था ।
- (vii) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पार्टियों को विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों वाली सार्वजनिक फाइल उनके अनुरोध पर निरीक्षण हेतु उपलब्ध करवाई थी ।
- (viii) उपरोक्त नियमों के नियम-16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए विचारित अनिवार्य तथ्यों/आधार को 07.06.2001 को हितबद्ध पार्टियों के समक्ष प्रकट किया गया था और उन पर मिली टिप्पणियों पर भी इन निष्कर्षों में विधिवत विचार किया गया है ।
- (ix) प्राधिकारी ने भारत में स्टाईरिन बुटाडिन रबड़ के सभी ज्ञात आयातकों (जिनके ब्यौरे याचिकाकर्ता ने उपलब्ध कराए थे और पिछली जांच के दौरान उपलब्ध थे) को सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भेजी और उनसे अनुरोध किया गया कि वे पत्र के जारी होने की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों को लिखित रूप में भिजवा दें ।
- (x) प्राधिकारी ने उक्त नियम 6(3) के अनुसार याचिका की एक प्रति ज्ञात निर्यातकों तथा सम्बद्ध देशों के दूतावासों को भेजी । याचिका की एक प्रति ऐसे अन्य हितबद्ध पक्षों को भी मुहैया कराई गई थी जिन्होंने इसके लिए निवेदन किया था ।

(xi) प्राधिकारी ने सम्बद्ध सूचना प्राप्त करने के लिए नियम 6(4) के अनुसार सम्बद्ध देशों के निम्नलिखित सभी ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को भी प्रश्नावली भेजी:

1. मै0 असाही कैमिकल कं0, टोक्यो, जापान
2. जापान इलासटोमर कं. लि0, टोक्यो, जापान
3. जापान सिंथेटिक रबड़ कं., टोक्यो, जापान
4. मित्सुबिशी कसेई कारपोरेशन, टोक्यो, जापान
5. निप्पोन जियोन कं. लि., जापान
6. सुमिटोमो कैमिकल कं., जापान
7. कोरिया कुम्हो पेट्रो-कैमिकल, सियोल, कोरिया
8. टीएसआरसी कारपोरेशन, ताइपेई, ताइवान
9. बायर ए.जी., लीवरकुसेन, फ्रांस
10. गुडईयर कैमिकल्स यूरोप, फ्रांस
11. माइकेलीनेट साई, फ्रांस
12. शैल किमी एसए, फ्रांस
13. कोम्बीनल बीईवी कैमिशे वर्क, जर्मनी
14. पेटकिम पेट्रोकिम्या ए0एस. टर्की
15. एमटीपोल सिनपोल कारपोरेशन, यूएसए
16. डीएसएम कोपोलिमर्स इंक, यूएसए
17. फायर स्टोन सिंथेटिक रबड़, एंड लेटैक्स कं., यूएसए

तथापि केवल निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा ही प्रश्नावली/अधिसूचना का उत्तर दिया गया:-

1. मै0 हयूनडाई पेट्रो-कैमिकल कं., लि0, कोरिया
2. मै0 पेटकिम पेट्रोकिम्या होल्डिंग एएस, टर्की
3. कोरिया कुम्हो पेट्रो-कैमिकल्स कं., लि0, कोरिया; मै0 ऋषिरूप पोलिमर्स प्रा0 लि0,

(xii) नई दिल्ली में संबद्ध देशों के दूतावासों को भी नियम 6(2) के अनुसार समीक्षा जांच आरंभ होने की सूचना दे दी गई थी और उनसे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों से निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली भरकर भेजने का आग्रह करने का अनुरोध किया गया था। निर्यातकों को भेजे गए पत्र, याचिका और प्रश्नावली की प्रति, ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची सहित दूतावासों को भी भेजी गई थी;

(xiii) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/उपयोगकर्ता संघों को एक प्रश्नावली भेजी गई थी ;

1. मै0 अपोलो टायर्स लि0, कोची
2. मै0 मोदीस्टोन लि0, नई दिल्ली
3. मै0 बिरला टायर्स लि0, कलकत्ता
4. मै0 सीट लि0, मुम्बई
5. मै0 गोबिन्द रबड़ लि., भिवाडी
6. मै0 जे.के. इंडस्ट्रीज लि0, नई दिल्ली
7. मै0 मोदी रबड़ लि0, नई दिल्ली

8. मै0 एमआरएफ लि0, मद्रास
9. मै0 डनलप इंडिया लि0, कलकत्ता
10. मै0 गुडईयर इंडिया लि0, नई दिल्ली
11. मै0 साउथ एशिया टायर्स लि0, औरंगाबाद
12. मै0 विक्रांत टायर्स लि0, मैसूर
13. ऑल इंडिया रबड़ इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, नई दिल्ली
14. ऑल इंडिया फुट वियर मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन, नई दिल्ली
15. मै0 सिंथेटिक्स एंड कैमिकल्स लि0, मुम्बई
16. मै0 सिंथेटिक्स एंड कैमिकल्स लि0, नई दिल्ली
17. मै0 अपार इंडस्ट्रीज लि0, मुम्बई
18. मै0 एपकोटैक्स लैटिसिस लि0, नवी मुम्बई
19. आटोमोटिव टायर मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन, नई दिल्ली
20. मै0 ऋषिरूप पोलिमर्स (प्रा0) लि0, मुम्बई

निम्नलिखित आयातकों/उपयोक्ता संघों ने प्रश्नावली/अधिसूचना का उत्तर दिया:

1. मै0 ऑटोमोटिव टायर मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन, नई दिल्ली
2. मै0 ऋषि रूप पोलिमर्स प्रा0 लि0, मुम्बई
3. ऑल इंडिया फैडरेशन ऑफ रबड़ फुटवियर मैन्यूफैक्चरर्स, नई दिल्ली
4. ऑल इंडिया रबड़ इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, नई दिल्ली
5. मै0 पैरागॉन रबड़ इंडस्ट्रीज, केरल
6. मै0 लियो रबरर्स, केरल
7. मै0 एमआरएफ चेन्नई
8. मै0 जे0के0 इंडस्ट्रीज, नई दिल्ली
9. मै0 सीट लि0, मुम्बई

(xiv) जैसाकि पिछली जांच में परिभाषित किया गया था, घरेलू उद्योग से क्षति के बारे में सूचना मांगी गई थी। इसके साथ-साथ दोनों घरेलू उत्पादकों से अर्थात् मै0 अपार लि0 तथा मै0 एपकोटैक्स से भी एसबीआर 1900 श्रृंखला की सूचना प्राप्त की गई। मै0 एससीएल ने भी क्षति के बारे में सूचना प्रस्तुत की।

(xv) सामान्यतया स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर भारत में एसबीआर 1900 श्रृंखला की इष्टतम उत्पादन लागत तथा माल को बनाने और बेचने की न्यूनतम लागत का हिसाब लगाया गया।

(xvi) *** चिह्न इस अधिसूचना में हितबद्ध पार्टियों द्वारा गोपनीय आधार पर दी गई सूचना का घोटक है और नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी ने इसे गोपनीय ही माना है।

(xvii) यह समीक्षा जांच 1.7.99 से 30.6.2000 तक की अवधि अर्थात् जांच की अवधि (पीओआई) के लिए की गई।

(ख) याचिकाकर्ताओं, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पक्षों के विचार और प्राधिकारी द्वारा जांच

विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा व्यक्त किए गए विचार प्रकटीकरण विवरण में दिए गए हैं। प्रकटीकरण विवरण के प्रत्युत्तर में दिए गए विचारों पर निम्न पैराओं में उस सीमा तक चर्चा की गई है जहां तक ये नियमों के अनुसार संगत हैं और इस मामले पर इनका प्रभाव है। हितबद्ध पक्षों द्वारा दिए गए तर्कों की जांच की गई है, उन पर विचार किया गया है और जहाँ कहीं उचित समझा गया वहाँ-निम्न संगत पैराओं में कार्यवाई की गई है।

(क) विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

I. मैसर्स अपार इंडस्ट्रीज लि. और मैसर्स अपकोटैक्स लेटिसेस ने निम्नलिखित अनुरोध किया है:-

1. एसबीआर 1900 श्रृंखला उच्च स्टेरीन रेजिन मास्टर बैच है हम निर्दिष्ट प्राधिकारी से निवेदन करते हैं कि वह अंतिम निष्कर्षों में इसे स्पष्ट करें।
2. इस बात पर विचार किए बिना कि यह शीर्ष 3903 अथवा 4002 के तहत आता है या नहीं, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने एसबीआर की सभी श्रेणियों पर पाटनरोधी शुल्क लगाना चाहा।
3. केएचएस-68 ग्रेड और कुछ नहीं बल्कि 1900 श्रृंखला है। इस बारे में सीमाशुल्क उपायुक्त कलकत्ता द्वारा एक आदेश जारी किया गया है।
4. कोरिया की कम्पनी ने केएचएस 68 को सिंथेटिक रबड़ के रूप में दावा किया है।
5. कम्पनी निर्दिष्ट प्राधिकारी और भारत सरकार को भ्रमित कर रही है और शुल्क से बचने की कोशिश कर रही है।
6. एसबीआर के उपभोक्ताओं के विभिन्न पत्रों से स्पष्ट होता है कि वे घरेलू उद्योग के एसबीआर के बदले के एचएस-68 का प्रयोग कर रहे हैं।
7. हम निवेदन करते हैं कि समीक्षा निष्कर्ष संबंधी अधिसूचना में यह स्पष्ट किया जाय कि एसबीआर 1900 श्रृंखला उच्च स्टेरीन रेजिन मास्टर बैच/इमल्सन रेजिन रबड़ मास्टर बैच है। भले ही उसका सीमाशुल्क शीर्ष कुछ भी हो। जहाँ तक एचएस-68 का संबंध है, यह एक उच्च स्टेरीन रेजिन मास्टर बैच/इमल्सन रेजिन मास्टर बैच है और यह वाणिज्यिक एवं तकनीकी रूप से घरेलू उद्योग के उत्पाद का प्रतिस्थापनीय है।

8. यह मैसर्स एटीएमए और मैसर्स श्रृषिरूप का मामला नहीं है कि एसबीआर 1900 श्रृंखला (जिसे एचएसआर के नाम से भी जाना जाता है) का भारत में उत्पादन नहीं किया जा रहा है। उनका सम्पूर्ण मामला एसबीआर 1500 और 1700 से संबंधित है। तथापि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने 1900 श्रृंखला समेत एसबीआर की सभी किस्मों की समीक्षा जांच शुरू की है। अतः एचएसआर के खिलाफ वर्तमान जांच वापस ली जाय।
9. एसबीआर 1900 श्रृंखला के बारे में समीक्षा जांच शुरू करने की जरूरत नहीं थी क्योंकि इस का उत्पादन भारत में हो रहा है और सम्पूर्ण जांच इस तथ्य पर आधारित है कि एसबीआर 1500 और 1700 श्रृंखला का उत्पादन बन्द कर दिया गया है। अतः जांच के दायरे को एसबीआर 1500 और 1700 श्रृंखला तक सीमित रखा जाए।
10. एसबीआर 1900 श्रृंखला के बारे में काफी भ्रम पैदा किया गया है और निर्दिष्ट प्राधिकारी से हमारा निवेदन है कि वह उच्च स्टेरिन रेजिन मास्टर बैच के रूप में एसबीआर 1900 को स्पष्ट करें। यह मानना तर्क संगत है कि 1900 श्रृंखला के एसबीआर ग्रेड के बारे में एक घरेलू उद्योग है।
11. प्रकटीकरण विवरण के प्रत्युत्तर में यह अनुरोध किया गया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी अंतिम निष्कर्षों में वर्तमान जांच के दायरे को स्पष्ट करें और एसबीआर 1900 श्रृंखला का उल्लेख उच्च स्टेरीन रेजिन मास्टर बैच/इमल्सन रेजिन रबड़ मास्टर बैच के रूप में भी किया जाय। यह भी अनुरोध किया गया है कि किसी विशेष ग्रेड पर पाटनरोधी शुल्क तब लगाया जा सकता है यदि यह एसबीआर 1900 श्रृंखला में आता हो और इस ग्रेड के लिए सिंथेटिक फाइबर की सीमाशुल्क संबंधी परिभाषा को पूरा करना आवश्यक नहीं है।

II. मैसर्स ऑटोमेटिव टायर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन (एटीएमए) ने निम्नलिखित अनुरोध किया है:-

1. चूँकि जांच अवधि अर्थात् 1.7.99 से 30.6.00 तक की अवधि के दौरान मै0 एससीएल ने कोई उत्पादन नहीं किया इसलिए उस पर विचार नहीं किया जा सकता है। दिनांक 12.1.99 के प्रारंभिक निष्कर्षों के पैरा ड.(5) में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने उस एसबीआर 1000 श्रृंखला को अलग कर दिया था जिसका उत्पादन मैसर्स एससीएल ने नहीं किया था। इस सदृश्यता के आधार पर चूँकि एसबीआर 1500 और 1700 ग्रेडों का उत्पादन समीक्षा अवधि के दौरान भारत में बिल्कुल नहीं किया गया था, इसलिए पाटनरोधी शुल्क को वापस लेने की जरूरत है।

III. मैसर्स कृषिरूप पालिमर्स प्राइवेट लि० ने निम्नलिखित अनुरोध किया है:-

1. मूल जांच में याचिकाकर्ता द्वारा इस आशय का कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया था कि अध्याय 3903.90 के अंतर्गत आने वाले स्टेरिन बुटाडिन-को-पोलिमर रेजिन एसबीआर के समान वस्तु है और यह विचाराधीन उत्पाद भी है और यह 1900 श्रृंखला के अंतर्गत आने वाले एसबीआर का प्रतिस्थापनीय है। इसके विपरीत प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्षों के पैरा ड.(5) में स्पष्ट निष्कर्ष निकाले हैं। घरेलू उद्योग अथवा भारत सरकार द्वारा इन निष्कर्षों के खिलाफ कोई अपील नहीं की गई थी और इन्हीं निष्कर्षों को अंतिम मान लिया गया था। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने स्पष्ट रूप से यह संकेत दिया था कि एचएस-68 नाम की कोई संबद्ध वस्तु नहीं है और इस पर कोई शुल्क नहीं लगाया जाना है। अंतिम निष्कर्षों से हमारी समझ यह बनती है कि यदि कोई आयातक अध्याय शीर्ष 4002.19 के अंतर्गत आने वाले एसबीआर को किसी अन्य सीमाशुल्क अध्याय शीर्ष सं० के अंतर्गत गलत ढंग से दर्शाकर पाटनरोधी शुल्क के भुगतान से बचने की कोशिश करता है तो सीमाशुल्क के प्राधिकारियों को वस्तुओं का उचित वर्गीकरण करना था और अध्याय 3903.90 के अंतर्गत आने वाले स्टेरिन एवं बुटाडिन पर पाटनरोधी शुल्क लगाना था।
2. मैसर्स एफ्कोटेक्स लेटिसेस ने यह अर्थ निकालने की कोशिश की है कि एसबीआर और स्टेरिन बुटाडिन कोपोलीमर रेजिन इस जांच की विषय वस्तु है जो सही नहीं है।
3. प्रकटीकरण विवरण के प्रत्युत्तर में मैसर्स कृषिरूप पालिमर्स प्रा० लि० ने संकेत दिया है कि मैसर्स रिलैसो फुटवियर बनाम सीमाशुल्क आयुक्त के मामले में दिए गए सीजेट के निर्णय के आलोक में आईसीडी, दिल्ली को निष्कर्षों में पुनः यह स्पष्ट करके चाहिए कि केओएसवाईएन, केएचएस-68 पर कोई पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया जाएगा क्योंकि यह 1900 श्रृंखला के अंतर्गत आने वाला एसबीआर नहीं है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

प्राधिकारी दिनांक 2.6.99 के अंतिम निष्कर्ष सं० 30/1/99-एडीडी अर्थात् पूर्ववर्ती जांच का स्मरण करते हुए यह तथ्य नोट करते हैं कि निष्कर्षों के पैरा ग(5) में विचाराधीन उत्पाद का निम्नानुसार उल्लेख किया गया है।

सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के सीमाशुल्क उप-शीर्ष 4002.19 के अंतर्गत वर्गीकृत संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित स्टेरिन बुटाडिन रबड़ (एसबीआर) जिसे दिनांक 21.1.99 के अंतिम निष्कर्षों में स्पष्ट किया गया है। प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्षों के पैरा-5 में, अन्य बातों के साथ-साथ, यह माना था कि विचाराधीन उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के सीमाशुल्क उप-शीर्ष 4002.19 के अंतर्गत एसबीआर, 1500 श्रृंखला, 1700 श्रृंखला और 1900 श्रृंखला है।"

प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि पैरा ग(6) तथा ग(7) में टैरिफ वर्गीकरण से संबंधित विशिष्ट मुद्दों की जांच करते समय प्राधिकारी ने दिनांक 21.1.99 के प्रारंभिक निष्कर्षों के पैरा ग(5) की पुष्टि की है। प्राधिकारी परिस्थितियों एवं वर्तमान समीक्षा के दायरे को भी नोट करते हैं और दिनांक 2.6.99 के अंतिम निष्कर्षों के पैरा ग(5) से ग(7) तक में तथा दिनांक 21/1/99 के प्रारंभिक निष्कर्षों के पैरा ड.(5) में यथा उल्लिखित विचाराधीन उत्पाद की भी पुष्टि करते हैं जिसमें एसबीआर की विभिन्न श्रेणियों अर्थात् 1000, 1500, 1700 और 1900 को क्रमशः हॉट टाइप, कोल्डटाइप, कोल्ड टाइप आयल एक्सटेंडेड और हाई स्टेरिन रेजिन मास्टर बैचों के रूप में परिभाषित किया गया है। प्राधिकारी यह बात भी नोट करते हैं कि माननीय सीगेट, राजस्व विभाग के दिनांक 2.2.2000 के आदेश सं. 21/2000-एडी के पश्चात् सीगेट के निर्णय के आलोक में विचाराधीन उत्पाद के वर्गीकरण को स्पष्ट करते हुए दिनांक 22.5.2000 की अधिसूचना सं० 73/2000 के द्वारा एसबीआर की सभी तीनों शृंखलाओं पर पाटनोधी शुल्क अधिसूचित किया है। प्राधिकारी इसकी पुष्टि करते हैं।

विचाराधीन उत्पाद के बारे में स्पष्टीकरण संबंधी मैसर्स अपार लि० और मैसर्स अफ्कोटेक्स लेटीसेस लि० और मैसर्स श्रृषिरूप पालिमर्स प्रा० लि० द्वारा किए गए अनुरोध के संदर्भ में प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि वर्तमान समीक्षा दिनांक 2.6.99 की पूर्ववर्ती जांच में पहले ही यथा उल्लिखित एबीआर की शृंखलाओं के संदर्भ में और उल्लिखित यथा स्पष्टीकृत के संदर्भ में है। वर्गीकरण से संबंधित अन्य मुद्दों का स्पष्टीकरण दिनांक 2.6.99 की पूर्ववर्ती जांच में पहले कर दिया गया है और उनकी माननीय सीगेट के दिनांक 2.2.2000 के निर्णय द्वारा आगे जांच की गई और स्पष्ट किया गया है।

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि समान वस्तु के बारे में कोई विशिष्ट तर्क नहीं दिया गया है और इस बात को देखते हुए प्राधिकारी 2.6.99 के अंतिम निष्कर्षों के पैरा छ(8) की पुष्टि करते हैं जिससे दिनांक 21.1.99 के प्रारंभिक निष्कर्षों पैरा-च की भी पुष्टि होती है।

(ख) घरेलू उद्योग

अ. मैसर्स सिंथेटिक्स एंड कैमिकल्स लि. (एससीएल) ने निम्नलिखित अनुरोध किया है:-

1. मैसर्स एससीएल भारत में उत्पाद अर्थात् एसबीआर का एकल सबसे बड़ा विनिर्माता है और वे एसबीआर 1500 और 1700 ग्रेडों का निर्माण करते हैं।
2. नियम 2(ख) के अनुसार, मैसर्स एससीएल इसके विनिर्माण में लगा हुआ है और इस उत्पाद के विनिर्माण को अस्थायी रूप से रोक दिए जाने से यह धारा 2(क) में यथा परिभाषित घरेलू उद्योग की परिभाषा से बाहर नहीं हो जाता है।
3. अधिनियम के प्रावधानों अथवा नियमों में पाटनोधी शुल्क का लगाना बन्द किए जाने की व्यवस्था नहीं है यदि इसे पाटन के दीर्घावधि प्रभाव के कारण आर्थिक दशाओं के खराब होने की वजह से लगाया गया हो।
4. नियमावली के नियम-11 में स्थापित उद्योग का उल्लेख है न कि घरेलू उद्योग का।

5. पाटनरोधी शुल्क लगाने हेतु कार्रवाई शुरू करने और/अथवा इसे जारी रखने के प्रयोजनार्थ कहीं भी इस पर विचार नहीं किया गया है कि शुल्क की अवधि के दौरान प्रत्येक समय पर घरेलू उद्योग में वास्तविक उत्पादन चलता रहा है।

II. मैसर्स अपार इंडस्ट्रीज लि० और मैसर्स अफ्कोटेक्स लेटिसेस ने निम्नलिखित अनुरोध किया है:-

1. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने विभिन्न मामलों अर्थात् थिओफिलीन एवं केफीन मामला, 3,4,5 निर्णायक समीक्षा, चीन से ट्रीड मैथोक्सी बेन्जालिड हाइड (टीएमबीए), दिनांक 29.9.97 की पीवीसी समीक्षा, 33,4,5 की निर्णायक समीक्षा, चीन से टीएमबीए 1.4.99 की एक्रिलिक फाइबर समीक्षा चीन से सोडियम फैरोसाइनाइड की समीक्षा, इत्यादि में घरेलू उद्योग की पहले समीक्षा की है।
2. नियम 23(3) प्राधिकारी को समीक्षा करने का अधिकार नहीं प्रदान करता है। नियम 23(1) निर्दिष्ट प्राधिकारी को समीक्षा करने का अधिकार प्रदान करता है। नियम 23(3) में केवल उस विधि का प्रावधान है जिससे क्षति की जांच होती है और नियम 2(ख) और 2(घ) का आह्वान स्वतः ही हो जाता है।
3. निर्दिष्ट प्राधिकारी को किसी संस्थापित उद्योग की क्षति की जांच धारा 9(ख) 1(ख) (ii) और नियम II(1) के अनुसार करनी होती है।
4. इसके प्रयोग से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का अर्थ किसी सुस्थापित उद्योग को हुई क्षति होगी और इसलिए वह केवल उस समय मौजूद घरेलू उत्पादकों तक ही सीमित नहीं है।
5. निर्दिष्ट प्राधिकारी को याचिकाकर्ता को हुई क्षति की जांच करना जरूरी नहीं है किन्तु घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच करना जरूरी है। अगर नियम 2(ख) का सहारा नहीं लिया गया है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी किसी भी रूप में क्षति का निर्धारण नहीं कर सकते हैं।
6. घरेलू उद्योग की परिभाषा का आशय उस कंपनी से नहीं होगा जिसने पूर्व में याचिका दायर की थी। यद्यपि समीक्षा संबंधी नियम 23 में नियम-5 का प्रयोग शामिल नहीं है तथापि निर्दिष्ट प्राधिकारी को घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच करने से पहले घरेलू उद्योग के क्षेत्र को परिभाषित करना होगा।
7. कुछ हितबद्ध पार्टियों ने यह तर्क दिया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को सभी किस्मों के घरेलू उद्योग पर सभी तीन किस्मों अर्थात् एसबीआर 1500, 1700 और 1900 सीरीज के साथ समग्र रूप में विचार करना होगा। अगर यही तर्क है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी को मौजूदा मामले में कोई समीक्षा जांच शुरू करना जरूरी नहीं था क्योंकि मै० अपार लिमि और मै० एफकोटेक्स लैटिसेज एसबीआर 1900 सीरीज का उत्पादन कर रहे हैं।

III. मै0 ऑल इंडिया टायर मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (एटीएमए) ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-

1. टायर विनिर्माता एसबीआर 1500 और 1700 सीरीज का उपयोग करते हैं और चूँकि मै0 एससीएल बंद हो चुका है इसलिए अब यह निर्विवाद है कि एसबीआर 1500 और 1700 सीरीज के लिए अब कोई घरेलू उद्योग नहीं है।
2. एसबीआर का उत्पादन करने वाला कोई घरेलू उद्योग नहीं रहा है और इसलिए यह प्रश्न नहीं हो सकता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

IV. मै0 आल इंडिया फैंडरेशन ऑफ रबड़ फूटवियर मैन्युफैक्चरर्स ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-

1. निर्दिष्ट प्राधिकारी को घरेलू उद्योग की संरचना और विचाराधीन उत्पाद की समीक्षा करने से मना करना चाहिए और पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की सिफारिश करने से भी मना करना चाहिए क्योंकि नियम 23(3) निर्दिष्ट प्राधिकारी को घरेलू उद्योग की संरचना और विचाराधीन उत्पाद की समीक्षा करने का अधिकारी नहीं देता है।
2. चूँकि नियम 23(3) के अन्तर्गत नियम 2(ख) का प्रयोग शामिल नहीं है इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी घरेलू उद्योग की परिभाषा की समीक्षा नहीं कर सकते हैं। चूँकि मै0 एससीएल जुलाई, 99 से एसबीआर का उत्पादन नहीं कर रहा है इसलिए क्षति किसी और कारण से हुई है न कि पाटन से।
3. मै0 अपार उद्योग लिमिटेड और मै0 एपकोटेक्स लैटिसेज न तो निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत की गई मूल याचिका में घरेलू उद्योग के भाग के रूप में थे और न ही वे सभी किस्मों का विनिर्माण करते थे।
4. नियम 23(3) निर्दिष्ट प्राधिकारी को घरेलू उद्योग की संरचना और विचाराधीन उत्पाद का पुनः परिभाषित करने का अधिकार नहीं देता है।
5. प्रकटन विवरण के प्रत्युत्तर में यह उल्लेख किया गया है कि एसबीआर 1900 सीरीज के लिए सही प्रक्रिया एक नई याचिका होनी चाहिए न कि कोई समीक्षा। पहले से किए गए अन्य अनुरोधों को दुहराया गया है।

प्रकटन विवरण के प्रत्युत्तर में मै0 बैनिक रबड़ इंडस्ट्रीज, कलकत्ता ने संकेत दिया है कि मै0 एपार लिमिटेड और मै0 एपकोटेक्स लैटिसेज लि0, ने कोई निर्णायक साक्ष्य नहीं दिया है जिससे यह पता चले कि वे एसबीआर 1900 सीरीज या उसके समान वस्तु का उत्पादन करते हैं और यह कि ऐसी स्थिति में पाटन मार्जिन या क्षति का निर्धारण नहीं हो सकता है।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

प्राधिकारी नोट करते हैं कि दिनांक 21.1.99 के प्रारंभिक निष्कर्षों के पैरा छ(7) जिसकी पुष्टि बाद दिनांक 2.6.99 के अन्तिम निष्कर्षों के पैरा ड.(9) के द्वारा की गई थी उनमें मै0 सिन्थेटिक्स एंड कैमिकल्स लि. (एससीएल), मै0 अपार लि., और मै0 एपकोटेक्स लैटिसेज को एसबीआर के उत्पादकों के रूप में माना गया था। याचिकाकर्ता मै0 एससीएल को घरेलू उत्पादन के 25% से अधिक के लिए जिम्मेवार माना गया था और इसलिए वे नियमों के अन्तर्गत घरेलू उद्योग की ओर से याचिका दायर करने की स्थिति में हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै0 एससीएल के बंद हो जाने के बाद जोकि वर्तमान जाँच का आधार है, मै0 अपार लि. और मै0 एपकोटेक्स लैटिसेज दो ऐसे उत्पादकों के रूप में बने हुए हैं जोकि केवल एसबीआर 1900 सीरीज का उत्पादन पूर्णरूप से करते हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि हालाँकि हितबद्ध पार्टियों ने घरेलू उद्योग को पुनः परिभाषित करने के विषय में तर्क दिया है फिर भी प्राधिकारी ने पूर्ववर्ती जाँच में भी मै0 अपार लिमिटेड और मै0 एपकोटेक्स लैटिसेज को एसबीआर के दो उत्पादकों के रूप में माना था। प्राधिकारी नोट करते हैं कि इसकी हमेशा से परिपाटी रही है कि समीक्षा जाँचों के चरण में घरेलू उद्योग की समीक्षा की जाय और उसे पुनः परिभाषित की जाय। प्राधिकारी को क्षति निर्धारण के पहलुओं की जाँच के प्रयोजन से समीक्षा जाँचों के दौरान घरेलू उद्योग की वर्तमान स्थिति को अच्छी तरह देखना जरूरी है। मै0 अपार लि. और मै0 एपकोटेक्स लैटिसेज समीक्षा जाँचों में एसबीआर 1900 सीरीज का एकमात्र घरेलू उत्पादक होगा जिससे वह केवल एसबीआर के इस सीरीज के लिए घरेलू उद्योग है। तथापि, एसबीआर 1500 और 1700 सीरीज का कोई उत्पादन नहीं हुआ है इसलिए इन सीरीज के लिए कोई घरेलू उद्योग नहीं है।

प्राधिकारी मै0 अपार लि. और मै0 एपकोटेक्स लैटिसेज लि0 द्वारा विनिर्मित वस्तुओं के संबंध में किए गए अनुरोधों के विषय में यह नोट करते हैं कि घरेलू उत्पादकों ने इसके लिए पर्याप्त साक्ष्य मुहैया कराया है कि उसकी वस्तुएं एसबीआर 1900 सीरीज की हैं।

(ग) सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन**1. मै0 हुन्डई पेट्रोकेमिकल्स कं. लि. ने निम्नलिखित अनुरोध किया है:**

1. हुन्डई एसबीआर का केवल 1500 और 1700 सीरीज का उत्पादन करता है। कोरिया में अन्य विनिर्माता मै0 कोरिया कुम्हो है जोकि सभी तीनों सीरीज अर्थात् एसबीआर 1500, 1700 और 1900 का विनिर्माण करता है। जाँच अवधि के शुरुआती दौर में हुन्डई ने एसबीआर का कोई उत्पादन/भारत को आपूर्ति नहीं की थी। प्राधिकारी ने हमारे लिए उच्चतर पहुँच मूल्य निर्धारित किया है। हालाँकि हमने जाँच अवधि में कोई निर्यात नहीं किया था। चालू अवधि के दौरान हमने भारत को एसबीआर 1700 सीरीज का एक भी किलोग्राम निर्यात नहीं किया है। चूँकि एसबीआर 1500 और 1700 सीरीज का एकमात्र उत्पादक अर्थात् मै0 एससीएल बंद है इसलिए किसी भी प्रकार का शुल्क जारी रखने का कोई औचित्य नहीं है।

(II) मै0 पेटकिम पेट्रोकिमिया होल्डिंग्स एस तुर्की ने निम्नलिखित अनुरोध किया है ।

1. निर्यातक ने एसबीआर 1502 ग्रेड के संबंध में जॉच अवधि के दौरान घरेलू बाजार में बिक्री से संबंधित सूचना अर्थात् कारखाना लागत व लाभ और घरेलू बिक्रियों के लिए बिक्री कीमत के स्वरूप की सूचना मुहैया कराई है । निर्यातक ने जॉच अवधि के दौरान उसके द्वारा भारत को किए गए एसबीआर 1502 ग्रेड के निर्यातों के ब्यौरे उपलब्ध कराए हैं ।

(III) मै0 ऑटोमोटिव टायर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन्स (एटीएमए) ने निम्नलिखित अनुरोध किया है:-

1. मै0 कोलमर पेट्रोकेमिकल्स के साथ प्रस्तावित व्यवस्था इस मामले से असंबद्ध है क्योंकि यह एक ऐसी गतिविधि है जोकि समीक्षा जॉच अवधि से इतर घटित हुई है । मै0 कोलमर के साथ करार को शुल्क को जारी रखने के साथ नहीं जोड़ा जा सकता है क्योंकि पाटनरोधी शुल्क कारकों जैसेकि सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और उत्पादन लागत इत्यादि पर निर्भर करता है ।

(iv) मै0 ऑल इंडिया फ़ेडरेशन ऑफ़ रबड़ फुटवियर मैनुफैक्चरर्स में निम्नलिखित अनुरोध किया है:-

1. मै0 एससीएल के तथाकथित पुनरुज्जीवन योजना के लिए ऐसी किसी पूर्व शर्त कि पाटनरोधी शुल्कों को लागू रखा जाए, नियमों के तहत स्वीकृति योग्य नहीं हैं और इसका उपयोग संरक्षणकारी उपाय के रूप में नहीं किया जा सकता है ।
2. घरेलू उद्योग का यह कथन कि पाटन के कारण से ही पूँजी का ह्रास हुआ है और उत्पादन बंद हुआ है, अप्रमाणिक है । घरेलू उद्योग को पहले शुल्क लगाए जाने के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध करना चाहिए । वस्तुतः घरेलू उद्योग प्राधिकारी के पास पहुँचा था किन्तु निर्दिष्ट प्राधिकारी ने कोई पहल नहीं की थी ।

V- आयातकों ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-

1. मै0 सीट लि., मुम्बई ने संबद्ध देशों अर्थात् जापान, कोरिया, ताइवान से एसबीआर के 1502 और 1712 ग्रेडों के जाँच अवधि के दौरान किए गए आयातों के ब्यौरे उपलब्ध कराए हैं ।
2. मै0 जेके इंडस्ट्रीज, नई दिल्ली ने प्रश्नावली के अनुसार जाँच अवधि के दौरान तुर्की से एसबीआर के 1712 और 1502 ग्रेडों के किए गए आयातों के ब्यौरे देते हुए सूचना उपलब्ध कराई है ।
3. मै. एमआरएफ, चेन्नई ने प्रश्नावली के अनुसार जाँच अवधि के दौरान यूएसए, कोरिया और ताइवान से एसबीआर के 1502 ग्रेडों के किए गए आयातों के ब्यौरे देते हुए सूचना उपलब्ध कराई है ।
4. मै0 लियो रवर्स, केरल ने प्रश्नावली के अनुसार जाँच अवधि के दौरान जापान से एसबीआर के एचएस 860 ग्रेडों, ब्राजील से 1502 ग्रेडों और यूएसए से 1904 ग्रेडों के किए गए आयातों के ब्यौरे देते हुए सूचना उपलब्ध कराई है ।
5. मै0 पैरागन रबड़ इंडस्ट्रीज, केरल ने जाँच अवधि में एसबीआर ग्रेड के एचएस 860 और 850, जापान से, एचएस 860 के लिए कोरिया से, एसएच 1502 का ब्राजील से और 1904 का यूएसए से किए गए आयातों के ब्यौरों को दर्शाते हुए उक्त प्रश्नावली के अनुसार सूचना प्रदान की है ।

(vi) मैसर्स सिंथेटिक्स एंड कैमिकल्स लि. (एससीएल) ने निम्नलिखित निवेदन किए हैं :-

1. मैसर्स एससीएल प्रयास कर रही है और क्षमता का विस्तार करने हेतु खर्चा कर रही है । तथापि, उनके सभी प्रयास व्यर्थ साबित हुए क्योंकि यह नोट किया गया था कि एसबीआर के संबंध में पिछले कई वर्षों से पाटन चल रहा है जिसका क्रमिक प्रभाव पड़ा था और इससे हमारी पूंजी घट रही थी । जिसके परिणामस्वरूप जुलाई, 99 के महीने में उत्पादन को रोकना पड़ा था ।
2. निर्यातकों को वस्तु का पाटन करने की अनुमति केवल इस बात पर नहीं दी जा सकती है क्योंकि घरेलू उद्योग द्वारा किया जाने वाला उत्पादन अस्थायी तौर पर रोक दिया गया है ।
3. यह केवल एक क्षणिक दशा है और उन नेकनीयती से उठाए गए कदमों को ध्यान में रखते हुए, जिन्हें प्रभावित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन को पुनः शुरू करने हेतु उठाया जा रहा है, समझना होगा और उनका मूल्यांकन करना होगा ।

4. क्षति का निर्धारण नियम-11 के अधीन किया जाता है। वे आवेदक जो समीक्षा की बात कह रहे, वो इस बात से इंकार नहीं कर रहे हैं कि भारत में उक्त वस्तु का पाटन किया जा रहा है। जबकि आवेदक यह आरोप लगाते हुए स्वीकार करते हैं कि पाटन कासहारा अभी भी लिया जा रहा है और इससे किसी प्रकार की कोई क्षति नहीं हो सकती है क्योंकि उत्पादन को करने वाला कोई स्थापित उद्योग नहीं है। यह विचार वैधानिक रूप से गलत है।

(vii) मैसर्स अपार लि. और एपको टैक्स लैटिसिस लि. ने निम्न निवेदन किए हैं:-

1. मैसर्स हुंडई ने अपने स्वयं स्वीकृति से यह दावा किया है कि वे एसबीआर 1900 श्रृंखला का उत्पादन नहीं करते हैं और वे 1900 श्रृंखला पर कोई टिप्पणी भी नहीं दे सकते हैं।
2. यह अनुरोध किया 1900 श्रृंखला पर से शुल्क वास ले लिए जाए, इसका कोई वैधानिक आधार नहीं है। यदि रबड़ और फुटवियर विनिर्माता अपने अंतिम उत्पाद के पाटन से परेशान हैं तो उन्हें पाटनरोध शुल्क लगाने का अनुरोध करना चाहिए न कि कच्ची सामग्रियों पर से पाटनरोधी शुल्कों को वापस लेने का अनुरोध करना चाहिए।
3. कोरिया से एसबीआर 1900 श्रृंखला का लगातार पाटन हो रहा है। जिसके परिणामस्वरूप उतराई कीमतों में पर्याप्त मात्रा में कमी आई है, कीमतों में गंभीरता से कमी आई है और बिक्री में कमी आई है।

(viii) मैसर्स अद्विरूप पोलीमर्स प्रा. लि. ने निम्न निवेदन किए हैं:-

1. के.के.पी.सी. ने समीक्षाधीन जांच अवधि और साथ ही मूल जांच अवधि के दौरान अध्याय 4002.19 के तहत आए किसी एसबीआर का निर्यात नहीं किया है और घरेलू उत्पादक को कोई वास्तविक क्षति नहीं हुई है।
2. मैसर्स अपार लि. और मैसर्स एपकोटैक्स लैटिसिस के तुलना पत्रों से लिए गए आकड़ों के आधार पर कंपनियों ने अपने-अपने तुलना-पत्रों में लाभ दिखाया है। मैसर्स अपार लि. और मैसर्स एपकोटैक्स लैटिसिस लि. द्वारा किए गए गोपनीय निवेदनों के अगोपनीय सारांश से यह नोट किया जाता है कि उन्होंने यह दावा किया है कि हमने प्राधिकारी से 1500 और 1700 श्रृंखला के एसबीआर ग्रेडों पर से पाटनरोधी शुल्क वापस लेने का अनुरोध किया है जोकि सही नहीं है और हमने एसबीआर के सभी ग्रेडों पर से पाटनरोधी शुल्क वापस लेने का अनुरोध किया है।
3. मैसर्स एपकोटैक्स ने उल्लेख किया है कि संबद्ध देशों के पास एसबीआर श्रृंखला के लिए पर्याप्त मात्रा कम उच्च क्षमताएं विद्यमान हैं। इस सपर कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है। यह केकेपीसी के मामले में सही नहीं है।

4. प्रकटन विवरण-पत्र के जवाब में, मैसर्स ऋषिरूप पोलीमर्स लि. ने अपने प्रधान मैसर्स केकेपीसी की ओर से यह उल्लेख किया है कि समीक्षाधीन जांच अवधि और साथ ही मूल जांच अवधि के दौरान एसबीआर 1900 श्रृंखला को कोई निर्यात नहीं हुआ था। इसको देखते हुए, घरेलू उद्योग को हुई किसी भी क्षति के लिए कोई कारणात्मक संबंध नहीं बनता है। अतः प्राधिकारी को यह मानना चाहिए कि केकेपीसी से हुए एसबीआर 1900 श्रृंखला के निर्यातों पर किसी पाटन मार्जिन की गणना करने या उस पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की कोई जरूरत नहीं है जो मैसर्स पैटकिम प्रेट्रोकिमें होल्डिंग एएस, टर्की के लिए प्राधिकारी ने निर्णयों के अनुरूप होना चाहिए।

(ix) ऑल इंडिया रबर इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन ने निम्न निवेदन किए हैं :-

1. संबद्ध देशों से एसबीआर की दो श्रृंखलाओं, अर्थात् 1500 और 1700 श्रृंखलाएं, के आयातों पर से पाटनरोधी शुल्क वापस लेना चाहिए और जुलाई, 99 से, अर्थात् उत्पादक के एकमात्र संयंत्र के बंद होने से, उपरोक्त एसबीआर की श्रृंखला के आयातकों से संग्रह किया गया जितना भी पाटनरोधी शुल्क है, आयातकों को वापस देना चाहिए।

सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

प्राधिकारी नोट करते हैं कि केवल मैसर्स पैटकीम प्रेट्रोकिमिया होल्डिंग एएस, टर्की ने ही उनको भेजी प्रश्नावली का जवाब दिया है। मैसर्स ऋषिरूप पोलीमर्स लि० ने केकेपीसी की ओर से यह उल्लेख किया है कि समीक्षाधीन जांच अवधि और शुरुआती जांच अवधि के दौरान भी एसबीआर 1900 श्रृंखला का निर्यात नहीं किया गया है। अन्य किसी निर्यातक/उत्पादक ने प्रश्नावली का जवाब नहीं दिया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि वर्तमान समीक्षा की शुरुआत आयातकों/उपयोक्ता उद्योग से प्राप्त इस अनुरोध पर की गई है कि एसबीआर 1500 और 1700 श्रृंखलाओं के एक मात्र उत्पादक ने अपना उत्पादन रोक दिया है। जहां तक, एसबीआर 1900 श्रृंखला का संबंध है, किसी भी हितबद्ध पार्टी ने कोई दावा नहीं किया है क्योंकि भारत में एसबीआर श्रृंखला के लिए कोई घरेलू उत्पादक नहीं है। इसके अलावा, केकेपीसी के द्वारा किया गया दावा कि कोई निर्यात नहीं किया गया है इसे छोड़कर किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने एसबीआर 1900 के पाटन से संबंधित सूचना पर कोई जवाब नहीं दिया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि चूंकि केकेपीसी ने समीक्षाधीन जांच अवधि में एसबीआर 1900 श्रृंखलाओं का किसी भी निर्यात के न होने का दावा किया है इसलिए दिनांक 2.6.99 को पूर्ववर्ती जांच में पहले से ही निर्धारित पाटन मार्जिन की समीक्षा करना संभव नहीं है। प्राधिकारी इसे देखते हुए एसबीआर 1900 श्रृंखला के लिए पूर्ववर्ती जांच में पहले ही यथा निर्धारित पाटन मार्जिन को संदर्भित करना उचित मानते हैं। जहां तक एसबीआर 1500 और 1700 श्रृंखला का संबंध है, प्राधिकारी इस तथ्य को देखते हुए की समीक्षा अवधि के दौरान इस श्रृंखला का कोई भी घरेलू उत्पादन नहीं हुआ है और इसके फलस्वरूप इन ग्रेडों के लिए कोई घरेलू उद्योग नहीं है इसलिए यह उचित होगा कि उपलब्ध जवाबों के आधार पर एसबीआर के इन श्रृंखला/ग्रेडों के लिए पाटन मार्जिन का मूल्यांकन किया जाए।

ज. क्षति एवं कारणात्मक संबंध और क्षति का निर्धारण

उपरोक्त नियम 11, अनुबंध-II के तहत क्षति के बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है तो इस प्रकार के निष्कर्ष में ".....पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उनके प्रभाव तथा इस प्रकार की वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण शामिल होगा।" कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि पाटित आयातों के कारण भारत में समान वस्तुओं की कीमत की तुलना में कीमत में कोई उल्लेखनीय गिरावट आई है अथवा नहीं अथवा क्या इस प्रकार के आयातों से कीमतों में अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक गिरावट आई है, अथवा कीमत वृद्धि में अन्यथा रूकावट आई है जो कि अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ गई होती।

भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए हम उक्त नियमावली के अनुबंध-II(iv) के अनुसरण में ऐसे संकेतकों पर विचार कर सकते हैं जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हों जैसे उत्पादन, क्षमता का उपयोग, बिक्री की मात्रा, भंडार, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन इत्यादि।

(अ). मैसर्स ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ़ रबड़ फुटवियर मैन्युफैक्चरर्स ने निम्न निवेदन किए हैं:-

- (1) मैसर्स सिंथेटिक एंड कैमिकल्स जुलाई, 1999 से एसबीआर का उत्पादन नहीं कर रहा है और इसलिए उपयोक्ता उद्योग को मुख्य निविष्टि की कमी हो गई है जिससे उपयोक्ता उद्योग संकट में है। परिष्कृत रबड़ वस्तुओं का, संबद्ध देशों से पहले से ही पाटन किया जा रहा है इसलिए, पाटनरोधी शुल्कों को हटा लिया जाना चाहिए।
- (2) मैसर्स एससीएल का संयंत्र अप्रैल, 1999 से बंद पड़ा है। पाटनरोधी शुल्कों की मौजूदगी के बावजूद जो इस तथ्य को स्थापित करते हैं कि यह अन्य कारकों की बजह से है और न कि पाटन के कारण।
- (3) चूंकि संपूर्ण जांच-अवधि में संयंत्र बंद पड़ा रहा इसलिए वैधानिक तौर पर निर्दिष्ट प्राधिकारी का यह कर्तव्य है और अधिकार है कि वह इस तथ्य की पहचान करे कि क्या घरेलू उद्योग को जिसने पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी के बावजूद उत्पादन नहीं किया, कोई क्षति हो सकती है।

- (4) यह मानना नहीं चाहिए कि घरेलू उद्योग को नुकसान हो सकता है जबकि वह वास्तव में ही मौजूद नहीं हैं। क्षति का निर्धारण-एक अव्यवहारिक क्रियाकलाप नहीं है लेकिन निर्दिष्ट प्राधिकारी को इसे एक प्रासंगिक व्यवसायिक मुद्दे के रूप में देखना होगा। पाटनोधी नियमों के तहत ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जो मैसर्स एससीएल के पुर्नगठित संयंत्र की पहचान कर सके।

II. मैसर्स आटोमोटिव टायर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन ने निम्न निवेदन किए हैं :-

1. नियम 23(3) यह दर्शाते हैं कि समीक्षा के मामले में अन्य नियमों के साथ-साथ नियम-II के प्रावधान भी लागू होंगे। इनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी का निर्धारण होगा। चूंकि एसबीआर 1500 और 1700 श्रृंखला के लिए कोई घरेलू उद्योग नहीं है, इसलिए यदि शुल्क को हटाया गया तो क्षति के बने रहने या होने का प्रश्न नहीं उठता। घरेलू उद्योग की स्थापना हेतु वास्तविक क्षति, वास्तविक क्षति के खतरे और वास्तविक मंदी का कोई मामला नहीं है। अतः, एटीएमए ने प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि वह एसबीआर 1500 और 1700 श्रृंखला पर पाटनोधी शुल्कों को तुरंत हटाने की सिफारिश करें।
2. प्रकटन विवरण-पत्र के जवाब में यह अनुरोध किया गया है कि प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को मई, 2001 के अंत तक उत्पादन शुरू करने का अवसर देकर उनके प्रति अधिक उदारता दिखाई है जो आवेछनीय थी क्योंकि घरेलू उद्योग की जांच केवल समीक्षा अवधि अर्थात् 1.7.99 से 30.6.2000 के संदर्भ में आवश्यक है।

(III) मै0 अपार लि0 तथा एपकोटेक्स लैटिसेस लि0 ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :-

1. यह तथ्यात्मक रूप से गलत है कि मै0 अपार इंडस्ट्रीज लि0 तथा मै0 एपकोटेक्स लैटिसेस ने पूर्ववर्ती जांच में भाग नहीं लिया। चूंकि मै0 एससीएल का हिरस्ता अपेक्षित अनुपात से अधिक था इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इसे उचित नहीं समझा कि इस कम्पनी से संबंधित सूचना मंगाई जाए।
2. यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी क्षति के मार्जिन की समीक्षा करते हैं तब पाटन मार्जिन की भी समीक्षा करने की आवश्यकता होगी।
3. घरेलू उद्योग को हुई क्षति में समीक्षा अवधि के दौरान अधिक वृद्धि हुई है और वर्तमान शुल्क के स्तर को बढ़ाने का ठोस आधार है।
4. जहां तक एसबीआर 1500 तथा 1700 के हितों का संबंध है, भारत के मजबूत एवं संगठित टायर उद्योग अपने खुद के हितों से भली भांति अवगत है।

5. मै0 अपार लि0 तथा एपकोटेक्स लैटिसेस ने सुनवाई के अंतिम चरण में तथा प्रारंभिक चरण में भी भाग लिया ।
6. हमने पोलैण्ड तथा ईयू से हुए आयातों के बारे में लागत संबंधी सूचना दी है जो स्पष्ट रूप से यह दर्शाती है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में और कमी आई है । वर्तमान जांच मौजूदा शुल्क की समीक्षा है और इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह घरेलू उद्योग के निष्पादन के रूप में घरेलू उद्योग को हो रही क्षति की जांच करें । निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए केवल क्षति के मार्जिन का पुनर्निर्धारण करना जरूरी है ।
7. घरेलू उद्योग की कीमतों में वृद्धि के संबंध में यह निवेदन है कि लागत संबंधी सूचना निर्दिष्ट प्राधिकारी के रिकार्ड में है और जो यह दर्शाती है कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है ।
8. मै0 अपार लि0 तथा मै0 एपकोटेक्स लैटिसेस को लाभप्रदता में कमी, कीमत में गिरावट तथा कटौती, लाभ के मार्जिन में कमी, स्टॉक के ढेर लगने, क्षमता उपयोग के इष्टतम स्तर से कम उपयोग इत्यादि के कारण क्षति हुई है ।
9. प्रकटन संबंधी विवरण पत्र के जवाब में यह दोहराया गया है कि जैसाकि धारा 9क(5) के तहत प्रावधान है, निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस बात की जांच करने की आवश्यकता है कि क्या मौजूदा शुल्क को समाप्त करने से पाटन तथा क्षति के जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति की संभावना है । चूंकि पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पुनर्निर्धारण की दशा में वर्तमान जांच एक समीक्षा है, इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को क्षति के मार्जिन का केवल पुनर्निर्धारण ही करना है । *दयाल*
10. शुल्कों की सिफारिश केवल डालर के रूप में की जा सकती है ।

(iv) मै0 सिंथेटिक्स एण्ड कैमिकल्स लि0 (एससीएल) ने निम्नलिखित अनुरोध किया है:-

1. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष निकाला था कि घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से हुए आयात के कारण हुई है ।
2. सीगेट ने दिनांक 2.2.2000 के अपने आदेश के जरिए निर्दिष्ट प्राधिकारी के आदेशों की पूर्ति की ।
3. पाटनरोधी शुल्क को समाप्त करने से ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी जिसमें उत्पादन शुरू करने के बाद भी मै0 एससीएल प्रतिस्पर्धी कीमत पर बेचने में समर्थ नहीं होगा जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन बंद करना पड़ेगा, जिससे बेरोजगारी होगी तथा आयातों के कारण दुर्लभ विदेशी मुद्रा का नुकसान होगा ।

4. मै0 एससीएल ने मै0 कोल्मर के साथ कर वसूली की व्यवस्था को दर्शाने वाला दिनांक 2.3.2001 का एक शपथ पत्र दायर किया जिसमें यह दर्शाया गया है कि उस समय की मौजूद स्थिति के आधार पर तथा उचित अपवादों के अधीन वे मई, 2001 के अंत तक उत्पादन शुरू करने की स्थिति में है। मै0 एससीएल ने वित्तीय संस्थानों/बैंकों द्वारा कर-वसूली की व्यवस्था की स्वीकृति, उत्तर प्रदेश सरकार तथा श्रम संघों से समर्थन प्राप्त होने के रूप में की गई प्रगति की भी सूचना दी है। प्रबंधन ने यह इंगित किया है कि उन्होंने हाल ही में उन समस्याओं का सामना किया है जो उनके नियंत्रण से बाहर थी जैसे:- प्रबंधन के निकट संबंधियों में से तीन व्यक्तियों की मृत्यु, कारखाने में लगी एक दुर्भाग्यपूर्ण आग, सरकारी कार्यालयों में मई-जून के महीनों में छुट्टियाँ।
5. मै0 एससीएल ने प्रकटन संबंधी विवरण-पत्र के जवाब में इस तथ्य को दोहराया है कि उनको हुई क्षति पाटन के लगातार आघात के कारण हुई है। उन्होंने यह भी दोहराया कि उनका एक स्थापित उद्योग है जिसमें बुनियादी सुविधाएँ और कार्य दल उपलब्ध है और यह कि नियम-11 के तहत प्राधिकारी को स्थापित उद्योग को हो रही क्षति को देखना होता है। मै0 एससीएल ने आगे मै0 कोल्मर पेट्रोकेमिकल्स, जर्मनी के साथ और वित्तीय संस्थान, आईसीआईसीआई के साथ कर-वसूली की व्यवस्था हेतु गठबंधन के बारे में हुई प्रगति को इंगित किया जो सैद्धांतिक रूप से उक्त व्यवस्था से सहमत हुए थे। उन्होंने यह इंगित किया कि यदि पाटनरोधी शुल्क हटा लिया जाता है तो वे प्रतिस्पर्धी कीमत पर अपनी बिक्री करने में समर्थ नहीं होंगे और उन्हें अपना उत्पादन बंद करना पड़ेगा। मै0 एससीएल ने आगे यह दोहराया कि इस बात को दर्शाए जाने की आवश्यकता है कि यदि पाटनरोधी शुल्क हटा लिया जाता है तो यह बंदी का संबंध पाटन के पाटन से बिल्कुल नहीं होगा। मै0 एससीएल ने मामले को आगे प्रमाणित करने के लिए व्यक्तिगत सुनवाई के लिए अनुरोध किया है।

(v) मै0 ऋषिरूप पॉलीमर्स प्रा0 लि0 ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:-

1. चूँकि मूल निष्कर्षों के समय मै0 अप्रैलि0 तथा मै0 एपकोटेक्स लैटिसे लि0 ने एसबीआर 1900 श्रेणी से संबंधित कोई आंकड़े प्रस्तुत नहीं किए और क्षति के आकलन के लिए खुद प्रस्तुत नहीं हुए इसलिए उस समय क्षति संबंधी कोई निष्कर्ष रिकार्ड या प्रमाणित नहीं हुआ है और इसलिए एसबीआर 1900 श्रेणी पर भी पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने का कोई औचित्य नहीं बनता है। मै0 एससीएल द्वारा उत्पादन को पुनः शुरू करने के इरादे का कोई संबंध नहीं है क्योंकि यह जांच अवधि के बाद की अवधि से संबंधित होगा। मै0 एससीएल द्वारा दायर मूल याचिका केवल 4002.19 तक ही सीमित है।
2. प्राधिकारी ने क्षति के विश्लेषण के लिए कोई आंकड़े 1900 श्रेणी के विद्यमान उत्पादकों के पास नहीं भेजे हैं।

3. मै0 अपार लि0 तथा मै0 एपकोटेक्स लैटिसेस लि0 का समीक्षाधीन जांच अवधि में किया उत्पादन वर्ष 1997-98 के उत्पादन से काफी अधिक है। उनके परीक्षित लेखे दर्शाते हैं कि एपकोटेक्स को नुकसान नहीं हुआ है।
4. मै0 एपकोटेक्स लैटिसेस लि0 ने यह तर्क दिया है कि धारा 9क(5) के अनुसार प्राधिकारी को समीक्षा कार्यवाही में क्षति का आकलन करने की आवश्यकता नहीं है। हम उनके विचारों से सहमत नहीं हैं और नियम 23(3) का संदर्भ लेते हैं जिसमें स्पष्ट रूप से इंगित किया गया है कि नियम-11 को सभी समीक्षाधीन मामलों पर लागू करना होता है।
5. प्रकटन संबंधी विवरण पत्र के जवाब में यह इंगित किया गया है कि चूँकि जांच अवधि के दौरान केकेपीसी से एसबीआर का आयात शून्य था इसलिए क्षति संबंधी किसी निष्कर्ष के लिए कोई कारणात्मक संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता है।

(vi) ऑल इंडिया रबड़ इंडस्ट्रीज परिसंघ ने निम्नलिखित अनुरोध किया है:-

1. फुटविद्यर उद्योग की वार्षिक आवश्यकताओं में एसबीआर 1900 के घरेलू आपूर्ति 25% से 30% तक ही है।
2. पाटनरोधी शुल्क रहित पहुँच लागत भी घरेलू कीमत से अधिक होगी जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय उत्पादकों को कोई क्षति नहीं होगी।

प्राधिकारी द्वारा जॉध

जहाँ तक पाटन के कारण में एससीएल को हुई क्षति के बारे में उनके निवेदन तथा मै0 कोल्मर पेट्रोकेमिकल्स, जर्मनी के साथ उनके गठबंध के बाद प्रतिस्पर्धी कीमत पर बिक्री करने में असमर्थता का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि दिनांक 21.1.99 को अधिसूचित आरम्भिक जांच के बाद लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी के बावजूद मै0 एससीएल अपने कारखाने में उत्पादन शुरू करने में असमर्थ रहे हैं। बंद होने की इतनी लम्बी अवधि की निश्चित रूप से एक अस्थायी घटना नहीं माना जा सकता है। यदि वाणिज्यिक उत्पादन शुरू करने के बाद मै0 एससीएल को पाटन के कारण क्षति महसूस होती है तो वह पाटनरोधी नियमों के अनुसार प्राधिकारी से उपचारात्मक कार्रवाई के लिए सम्पर्क कर सकता है। तथापि कारखाने के लम्बी अवधि तक बंद होने का श्रेय केवल पाटन की घटना को नहीं दिया जा सकता है क्योंकि पाटन के कारण पाटनरोधी शुल्क के जरिए मै0 एससीएल को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान की गई है जिसके परिणामस्वरूप एसबीआर कोई उत्पादन नहीं हुआ है।

जहाँ तक एसबीआर 1900 श्रेणी का संबंध है, मै0 अपार लि0 तथा मै0 एपकोटेक्स लैसेस के लिए उत्पादन, क्षमता उपयोग, घरेलू बिक्री, निवल बिक्री प्राप्ति के लिए निम्नलिखित रूझान नोट किए गए हैं:-

- (i) मै0 अपार लि0 तथा एपकोटेक्स लैटिससे लि के उत्पादन तथा घरेलू बिक्री में वर्ष 1998-99 की तुलना में जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई क्योंकि इन दोनों उत्पादकों की क्षमता में वृद्धि हुई है ।
- (ii) मै0 अपार लि0 के क्षमता उपयोग में वर्ष 1998-99 की तुलना में जांच अवधि के दौरान कमी आई है जबकि एपकोटेक्स लैटिससे लि0 के क्षमता उपयोग में वर्ष 1998-99 की तुलना में जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई है । जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग 58.32% है ।
- (iii) दोनों उत्पादकों की जांच अवधि में *** रुपए प्रति किग्रा. तथा *** रुपए प्रति किग्रा. की बिक्री कीमत इन उत्पादकों के लिए यथा निर्धारित क्षति रहित कीमत (एनआईबी) से कम रहीं है । संबद्ध देश से कम पहुँच मूल्य के कारण दोनों उत्पादकों की घटी हुई निवल बिक्री प्राप्ति पाटित संबद्ध वस्तु द्वारा कीमत कटौती का परिणाम है और परिणामस्वरूप इन दोनों उत्पादकों को जांच अवधि में वित्तीय हानि हुई है ।
- (iv) संबद्ध देशों से एसबीआर 1900 श्रेणी के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क के हटाए जाने से दोनों उत्पादकों को कीमत कटौती के कारण वास्तविक क्षति होगी ।
- (v) प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि एसबीआर में कीमत में कमी एसबीआर 1900 की मांग के कारण नहीं हुई जो 1997-98 की 7764 मी. टन से बढ़कर 1998-99 में 10674 मी0 टन तक और जांच अवधि में बढ़कर 15082 मी. टन तक हो गई ।

पहुँच मूल्य

इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुँच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के तहत सीमाशुल्क द्वारा यथा आकलित निर्धारणीय मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9, 9क के अन्तर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के सीमाशुल्क शामिल होंगे ।

भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत में मै0 सिन्थैटिक्स एण्ड कैमिकल्स लि. (एससीएल) द्वारा एसबीआर 1500 और 1700 श्रृंखलाओं का उत्पादन न किए जाने के संबंध में आयात/उपयोगकर्ता उद्योग द्वारा किए गए अभ्यावेदन की समीक्षा शुरू की गई है । प्राधिकारी ने उपयोगकर्ता उद्योग के दावे को नोट किया है और तदनुसार, संबद्ध वस्तुओं के 1500 और 1700 श्रृंखलाओं, जिनका समीक्षाधीन अवधि के दौरान उत्पादन नहीं किया गया था तुलना में उपयोगकर्ता उद्योग के हित पर विचार किया है । तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि एसबीआर 1900 श्रृंखला का अभी भी समीक्षाधीन अवधि के दौरान देश में उत्पादन किया जा रहा था और उसका अभी भी उत्पादन किया जा रहा है । प्राधिकारी ने मांग तथा आपूर्ति के बीच के अन्तर, मै0 एपार लि. और मै0 एपकोटेक्स लैटिससेस द्वारा उत्पादन किए जा रहे उत्पाद की गुणवत्ता, एक उत्पादक को अनुचित रूप से लाभ मिलना और रबड़ बोर्ड द्वारा यथा सूचित विभिन्न विनिर्माण इकाइयों के बन्द होने के बारे में विभिन्न

आयातकों/उपयोगकर्ता उद्योगों द्वारा दिए गए तर्कों को नोट किया है। प्राधिकारी ने भारत में एसबीआर 1900 श्रृंखला के प्रचलित कीमत स्तर के संबंध में दिए गए अनुरोधों को भी नोट किया है।

प्राधिकारी मानते हैं कि यद्यपि पाटनरोधी शुल्क लगाने से एसबीआर 1900 श्रृंखला से विनिर्मित उत्पादों की कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं, और परिणामतः इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है, तथापि पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी, विशेषकर तब जबकि पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य केवल घरेलू उद्योग को पाटन के कारण हो रही क्षति की पूर्ति करना हो और न कि उन्हें कोई व्यापक सुरक्षा प्रदान करना। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन की प्रक्रिया द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे और घरेलू उद्योग का ह्रास रूकेगा तथा एसबीआर 1900 श्रृंखला के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प की उपलब्धता बनाए रखने में मदद मिलेगी। पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देशों से होने वाले आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इस प्रकार उपभोक्ताओं को एसबीआर 1900 श्रृंखला की उपलब्धता पर भी प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अन्तिम निष्कर्ष:-

प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि:

(क) एसबीआर 1500 और 1700 श्रृंखला का कोई घरेलू उत्पादन नहीं हुआ है परिणामस्वरूप समीक्षा अवधि के दौरान इन श्रृंखलाओं के लिए कोई घरेलू उद्योग नहीं है। इन दोनों श्रृंखलाओं के लिए एकमात्र उत्पादक अर्थात् मै0 एससीएल भी इस समय उत्पादन नहीं कर रहा है। तथापि, अन्य श्रृंखलाओं अर्थात् एसबीआर 1900 के लिए दो उत्पादक अर्थात् मै0 एपार लिमिटेड और मै0 एपकोटेक्स लैटिसेस लि0 हैं, जो एसबीआर 1900 श्रृंखला के लिए घरेलू उद्योग हैं जैसाकि उपरोक्त पैरा में बताया गया है। प्राधिकारी ने इन दोनों घरेलू उत्पादकों के लिए एसबीआर 1900 श्रृंखला के संबंध में क्षति और इसके जारी रहने का मूल्यांकन किया है।

(ख) मै0 एससीएल ने वर्तमान समीक्षा की जांच की अवधि में उत्पादन नहीं किया है। अतः देश में एसबीआर 1500 और 1700 श्रृंखलाओं का कोई उत्पादन नहीं हुआ है और तदनुसार देश में कोई घरेलू उत्पादक तथा घरेलू उद्योग नहीं है।

(ग) संबद्ध देशों के किसी निर्यातक/उत्पादक ने एसबीआर 1900 श्रृंखलाओं के पाटन के संबंध में प्रत्युत्तर नहीं दिया है। वर्तमान समीक्षा के उद्देश्य एवं दायरे को ध्यान में रखते हुए अन्तिम निष्कर्षों में पहले से निर्धारित पाटन मार्जिन की एतद्द्वारा पुनः पुष्टि की जाती है।

(घ) जांच की समीक्षा अवधि के दौरान एसबीआर 1900 श्रृंखला के लिए मै0 एपार लि0 और मै0 एपकोटेक्स लैटिसेस, घरेलू उद्योग को एसबीआर 1900 श्रृंखला के लगातार पाटन के कारण क्षति हुई है।

(ङ) प्राधिकारी दिनांक 22.5.2000 की सीमाशुल्क अधिसूचना संख्या 73/2000-सीमाशुल्क के द्वारा पहले ही यथा अधिसूचित संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित अध्याय-40 सीमाशुल्क शीर्ष सं0 4002.19 और अध्याय 39 सीमाशुल्क शीर्ष सं0 3903.90 के अन्तर्गत आने वाले एसबीआर के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की जरूरत मानते हैं।

(च) इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के तहत सीमाशुल्क द्वारा यथा आकलित निर्धारणीय मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क अधिनियम 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अन्तर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के सीमाशुल्क शामिल होंगे।

(छ) तदनुसार, यह प्रस्ताव है कि दिनांक 22.5.2000 की सीमाशुल्क अधिनियम सं0 73/2000-सीमाशुल्क में यथा निर्धारित पाटनरोधी शुल्कों को केवल एसबीआर 1900 श्रृंखला पर लगाना जारी रखा जाए जबकि एसबीआर 1500 और 1700 श्रृंखला संबंधी इस अधिसूचना में यथा निर्धारित पाटनरोधी शुल्कों को समाप्त कर दिया जाए।

तदनुसार यह प्रस्ताव है कि जापान, कोरिया, यूएसए, तुर्की और ताइवान मूल के या वहाँ से निर्यातित और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के क्रमशः अध्याय 39 और 40 के सीमाशुल्क उप-शीर्ष 3903.90 और 4002.19 के अन्तर्गत आने वाले एसबीआर 1900 श्रृंखला अर्थात् हाइ स्टाइरीन रेसिन मास्टरबैच के सभी ग्रडों के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा नीचे यथा-निर्धारित पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए।

क्र.सं.	देश	उत्पादक या निर्यातक का नाम	ग्रेड	राशि अमरीकी डालर/मी.टन
1	2	3	4	5
1.	संयुक्त राज्य अमरीका	सभी निर्यातक	1900 श्रृंखला	189.89
2.	ताइवान	ताइवान सिन्थेटिक रबर कारपोरेशन	1900 श्रृंखला	90.00
		अन्य	1900 श्रृंखला	90.00
3.	तुर्की	पेटकिम पेट्रोकिमिया	1900 श्रृंखला	272.99
		अन्य	1900 श्रृंखला	272.99
4.	कोरिया	कोरिया कुम्हो	1900 श्रृंखला	204.00
		अन्य निर्यातक	1900 श्रृंखला	204.00
5.	जापान	जेएसआर कोरपोरेशन	1900 श्रृंखला	156.93
		अन्य	1900 श्रृंखला	156.93

इस आदेश के खिलाफ कोई अपील उपरोक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पादशुल्क एवं स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्याधिकरण के समक्ष दायर की जा सकेगी ।

एल. वी. सप्तऋषि, निर्दिष्ट प्राधिकारी एवं अपर सचिव

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

Final Findings

New Delhi, the 3rd July, 2001

Sub : Review of Anti-Dumping duties concerning imports of Styrene Butadiene Rubber from (SBR) from Japan, Korea, USA, Turkey and Taiwan—Final Findings

No. 34/1/2000-DGAD.— - Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof:

A. PROCEDURE

1. The Procedure described below has been followed:
 - i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the Rules, received from M/s Automotive Tyre Manufactures Associatin (ATMA) and M/s Rishiroop Polymers P Ltd. (also referred to as petitioner in this notification), a request for review of anti-dumping duty imposed on imports of Styrene Butadiene Rubber (SBR) (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from Japan, Korea, USA, Turkey and Taiwan (hereinafter referred to as subject countries). The authority considering the arguments regarding eligibility of M/s ATMA for seeking review considers it appropriate under Rule 2(c) to recognize M/s ATMA as an interested party eligible to seek review.
 - ii) The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner, decided to initiate review investigations against imports of SBR from Japan, Korea, USA, Turkey and Taiwan. The Authority issued a public notice dated 9-11-2000 published in the Gazette of

India, Extraordinary, initiating review investigations concerning imports of SBR originating in or exported from Japan, Korea, USA, Turkey and Taiwan.

- iii) The investigations concluded by the Authority vide notification dated 2.6.99 have been referred to as "the previous investigations" in this notification.
- iv) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of SBR in India during the period of review.
- v) The Authority notified the Embassies of the subject countries in New Delhi before proceeding to initiate the review investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the Rule.
- vi) The Authority held a public hearing on 9-2-2001. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of the views expressed orally. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and were requested to offer their rebuttals.
- vii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained and kept open for inspection by any interested party.
- viii) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to all known interested parties on 7-6-2001 and comments received on the same have also been duly considered in these findings.
- ix) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known importers (whose details were made available by petitioner and were available earlier during the previous investigation) of Styrene Butadiene Rubber in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter.
- x) The Authority provided a copy of the petition to the known exporters and the Embassies of the subject countries in accordance with Rules 6(3) supra. A copy of the petition was also provided to other interested parties, wherever requested.
- xi) The Authority sent a questionnaire to elicit relevant information to the following known exporters/producers from the subject countries in accordance with the Rule 6(4):

1. M/s Asahi Chemical Co., Tokyo, Japan
2. Japan Elastomer Co. Ltd, Tokyo, Japan
3. Japan Synthetic Rubber Co., Tokyo, Japan
4. Mitsubishi Kasei Corporation, Tokyo, Japan

5. Nippon Zeon Co. Ltd., Japan
6. Sumitomo Chemical Co., Japan
7. Korea Kumho Petrochemical, Seoul, Korea
8. TSRC Corporation, Taipei, Taiwan
9. Bayer AG, Leverkusen, France
10. Goodyear Chemicals Europe, France
11. Michelin Cie, France
12. Shell Chimie S.A., France
13. Kombinal VEB Chemische Werke, Germany
14. Petkim Petrokimya AS, Turkey
15. Ameripol Synpol Corporation, U.S.A.
16. DSM Copolymers Inc., USA
17. Firestone Synthetic Rubber & Ltx Co., U.S.A.

However, response to the questionnaire/notification was filed by the following exporters/producers only:-

1. M/s Hyundai Petrochemical Co. Ltd., Korea
2. M/s Petkim Petrokimya Holding AS, Turkey
3. Korea Kumho Petrochemical Co. Ltd. (KKPC), Korea filed by M/s Rishiroop Polymers Pvt. Ltd.

xii) The Embassies of the subject countries in New Delhi were informed about the initiation of the review investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporters was also sent to the Embassies, alongwith a list of known exporters/producers.

xiii) A questionnaire was sent to the following known importers/user associations of the subject goods for necessary information in accordance with Rule 6(4):

1. M/s Apollo Tyres Ltd., Kochi.
2. M.s Modistone Ltd., New Delhi.
3. M/s Birla Tyres Ltd., Calcutta.
4. M/s Ceat Ltd., Mumbai.
5. M/s Govind Rubber Ltd., Bhiwadi.
6. M/s J.K. Industries Ltd., New Delhi.
7. M/s. Modi Rubber Ltd., New Delhi.
8. M/s MRF Ltd., Madras.

9. M/s Dunlop India Ltd., Calcutta.
10. M/s Goodyear India Ltd., New Delhi.
11. M/s South Asia Tyres Ltd., Aurangabad
12. M/s Vikrant Tyres Ltd., Mysore.
13. All India Rubber Industries Association, Mumbai.
14. All India Footwear Manufacturers Association, New Delhi.
15. M/s Synthetics and Chemicals Ltd., Mumbai
16. M/s Synthetics and Chemicals Ltd., New Delhi.
17. M/s Apar Industries Ltd., Mumbai.
18. M/s Apcotex Lattices Ltd., Navi Mumbai.
19. Automotive Tyre Manufacturers Association, New Delhi.
20. M/s Rishiroop Polymers (P) Ltd., Mumbai.

Response to the questionnaire/notification was filed by the following Importers/user Associations:

1. M/s Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA), New Delhi.
 2. M/s Rishiroop Polymers Pvt. Ltd., Mumbai
 3. All India Federation of Rubber Footwear Manufacturers, New Delhi.
 4. All India Rubber Industries Association, New Delhi.
 5. Paragon Rubber Industries, Kerala
 6. M/s Leo Rubbers Kerala
 7. M/s MRF Chennai
 8. M/s J.K. Industries, New Delhi
 9. M/s CEAT Ltd., Mumbai
- xiv) Information regarding injury was sought from the domestic industry as defined in previous investigation, and also from the two domestic producers viz. M/s Apar Ltd. and M/s Apcotex Lattices Ltd. for SBR 1900 series. M/s SCL also furnished information pertaining to injury.
- xv) Cost investigation was also conducted for SBR 1900 series so as to work out optimum cost of production and cost to make and sell SBR 1900 series in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP).
- xvi) ****in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;
- xvii) Review investigation was carried out for the period starting from 1-7-99 to 30-6-2000 i.e. the period of investigation (POI).

B. VIEWS OF PETITIONERS, EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES AND EXAMINATION BY AUTHORITY

The views expressed by the various interested parties have been stated in the disclosure statement. The views raised in response to the disclosure statement are discussed in the relevant paras herein below to the extent these are relevant as per rules and have a bearing upon the case. The arguments raised by the interested parties have been examined, considered and, wherever appropriate, dealt in the relevant paras herein below.

A) PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

I. M/s Apar Industries Ltd. and M/s Apcotex Lattices have made the following submissions:-

1. SBR 1900 series is High Styrene Resin Master Batch, we request the DA to clarify this in the Final Findings.
2. DA wanted to impose anti dumping duty on all grades of SBR irrespective whether it is under heading 3903 or 4002.
3. KHS-68 grade is nothing but SBR 1900 series. An order in this respect has been passed by Dy. Commissioner of Customs, Calcutta.
4. The company from Korea has claimed KHS 68 as synthetic rubber.
5. The company is trying to mislead DA and Govt. of India and is trying to circumvent duty.
6. Various letters from consumers of SBR specify that they are using KHS-68 interchangeably with the domestic industry's SBR.
7. We request for clarification in the review findings notification that SBR 1900 series is High Styrene Resin Master Batch/ Emulsion Resin Rubber Master Batch, regardless of the customs Head. As regards, KHS 68, it is a high Styrene Resin Master Batch/emulsion resin master batch and is commercially and technically substitutable with domestic industry's product.
8. It is not the case of M/s ATMA and M/s Rishiroop that SBR 1900 series (also known as HSR) is not being produced in India. Their whole case relates to SBR 1500 and 1700. However, DA has initiated review investigation of all types of SBR including 1900 series. The present investigation may, therefore, be withdrawn against HSR.
9. Initiation of review investigation was not warranted in respect of SBR 1900 series as the same is being produced in the country and the

whole initiation is based on the fact that the production of SBR 1500 and 1700 series has been stopped. The scope of investigation may, therefore, be restricted to SBR 1500 and 1700 series.

10. There is lot of confusion created regarding the SBR 1900 series and we request DA to clarify SBR 1900 series as High Styrene Resin Master Batch. It is logical to hold that there is a domestic industry in respect of SBR grade of 1900 series.
11. In response to the disclosure statement, it has been submitted that DA should clarify in the Final Findings the scope of the present investigations and also the description of SBR 1900 series as High Styrene Resin Master Batches/Emulsion Resin Rubber Masterbatch. It has also been submitted that a particular grade may be subject to anti dumping duty if it falls in SBR 1900 series and that it is not necessary for this grade to meet the customs definition of synthetic rubber.

II. M/s Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA) has made the following submissions:-

1. Since during the period of investigation i.e. 1.7.99 to 30.6.00, M/s SCL did not produce, they deserve no consideration. In the Para E(5) of the Preliminary Findings dot. 12.1.99, DA excluded SBR 1000 series which was not produced by M/s SCL. On this analogy since SBR 1500 and 1700 grades are not at all being produced in India during the period of review, the anti dumping duty is required to be withdrawn.

III. M/s Rishiroop Polymers Private Limited has made the following submissions:-

1. There was no evidence provided by the petitioner in the original investigation that styrene butadiene co-polymer resin falling under chapter 3903.90 was Like Article to SBR and was also the product under consideration and was substitutable with the SBR falling under 1900 series. The authority on the contrary has made clear findings in Para E(5) of the Preliminary Findings. No appeal was pressed against these findings by the domestic industry or the Indian Government and the same have attained finality. DA had also specifically indicated that KHS 68 by name is not the subject item and no duty has to be levied on it. Our understanding of the final Findings is that if an importer tries to circumvent paying anti dumping duty on SBR falling under chapter heading 4002.19 by mis-

declaring it under any other customs chapter heading no. then the customs authorities were to classify the goods properly and to levy anti dumping duty on styrene and butadiene falling under chapter 3903.90.

2. M/s Apcotex Lattices have tried to imply that SBR as well as styrene butadiene copolymer resin are the subject matter of this investigation which is not true.
3. In response to the disclosure statement M/s Rishiroop Polymers Private Limited have indicated that the authority in light of the CEGAT's judgement in the matter of M/s Relaxo Footwer V/s Commissioner of Customs, ICD, Delhi should re-clarify the finding that there would be no anti dumping duty leviable on KOSYN KHS 68 since it is not SBR falling under 1900 series.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

The authority recalls the Final findings NO. 30/1/99- ADD dt. 2.6.99 viz. the previous investigations and notes that Para C(5) of the findings indicate product under consideration as

"Styrene Butadiene Rubber (SBR) originating in or exported from the subject countries classified under custom sub heading 4002.19 of the Customs Tariff Act which has been explained in Para 5 of the preliminary findings dated 21.1.99. The Authority had, inter-alia held at para 5 of the preliminary findings that product under consideration is SBR 1500 series, 1700 series and 1900 series under customs sub heading 4002.19 of the Customs Tariff Act."

The authority notes that while examining specific issues pertaining to tariff classification in Paras C(6) and C(7) the authority has confirmed para E(5) of Preliminary Findings dt. 21.1.99. The authority also notes the circumstances and scope of the present review and confirms the product under consideration as indicated in paras C(5) to C(7) of final Findings dt. 2.6.99 and also para E(5) of the Preliminary Findings dt. 21.1.99 wherein various series of SBR viz. 1000, 1500, 1700 and 1900 have been defined as hot type, cold type, cold type oil extended and high styrene resin master batches respectively. The authority also notes that subsequent to order no. 21/2000-AD dt. 2.2.2000 of the Hon'ble CEGAT Deptt. of Revenue has notified vide its notification no. 73/2000 dt. 22.5.2000 the anti dumping duties on all the three series of SBR clarifying the classification of the product under consideration in light of the CEGAT's judgement. The authority confirms the same.

In regard to submission made by M/s Apar Ltd. and M/s Apcotex Lattices Ltd. and M/s Rishiroop Polymer Pvt. Ltd. regarding clarification on the product under consideration, the authority notes that the present review is with reference to the series of SBR as already indicated in the previous investigation dated 2-6-99 and also as clarified above. The other issues pertaining to classification have already been clarified in the previous investigation dated 2-6-99 as also further examined and clarified by Hon'ble CEGAT's judgement dated 2-2-2000.

The authority notes that no specific argument has been made on the issue of Like Article and in view of this the authority confirms Para D(8) of the Final Findings dt. 2.6.99 thereby also confirming para F of Preliminary Findings dt. 21.1.99.

B) DOMESTIC INDUSTRY

I. M/s Synthetics and Chemicals Limited (SCL) have made the following submissions:-

1. M/s SCL are the single largest manufacturer of the product namely, SBR in India and they make the grades namely SBR 1500 and 1700.
2. As per Rule 2(b), M/s SCL is engaged in the manufacture and temporary suspension of production does not take it out from the definition of the domestic industry as defined in Section 2(b).
3. There is no provision in the Act or in the Rules to discontinue imposition of anti dumping duty if it is due to deteriorating economic conditions caused by prolonged effect of dumping.
4. Rule 11 of the Rules uses expression established industry and not domestic industry.
5. Nowhere it has been contemplated either for the purpose of initiation of proceedings for levy of anti dumping duty and/or for its continuation that actual production has been going on in the domestic industry at every point of time during the period of duty.

II. M/s Apar Industries Ltd. and M/s Apcotex Lattices have made the following submissions:-

1. DA in various cases have earlier reviewed the structure of domestic industry viz. in Theophylline and Caffeine case, sunset review of 3,4,5, Tri Methoxy Benzaldehyde (TMBA) from China, review of PVC dt. 29.9.97, sunset review of 3,4,5 TMBA from China, review of acrylic

fibre dt. 1.4.99, review of Sodium Ferrocyanide from China review of NBR dt. 1.4.99 etc.

2. Rule 23(3) does not empower the authority to conduct a review. Rule 23(1) empowers the DA to conduct the review. Rule 23(3) merely provides the manner in which it has to determine injury and Rule 2(b) and 2(d) get invoked automatically.
3. The Designated Authority has to examine injury to any established industry as per Section 9(B) (1)b(ii) and Rule 11 (1).
4. Injury to the domestic industry by application would mean injury to any established industry and is therefore, not restricted to only domestic producers which exist at that point of time.
5. DA is not required to examine injury to the petitioner but to the domestic industry. if Rule 2(b) is not invoked, there is no way DA can determine injury.
6. The definition of the domestic industry would not imply the company who had earlier filed the petition. Though Rule 23 dealing with review does not include the applicability of Rule 5, DA would have to first define the scope of domestic industry before examining the injury to the domestic industry.

It has been argued by some interested parties that DA will have to consider the domestic industry of all the types as a whole with all the three types i.e. SBR 1500, 1700 and 1900 series. If this is the contention then there was not any necessity for the DA to initiate review investigations in the present matter since M/s Apar Ltd. and M/s Apcotex Lattices continue to produce SBR 1900 series.

III. M/s All India Tyre Manufacturers Association (ATMA) has made the following submissions:-

1. Tyre manufacturers use SBR 1500 and 1700 series and since M/s SCL have closed down, it is now undisputed that there is no domestic industry for SBR 1500 and 1700 series.
2. There is no domestic industry producing SBR and hence the question that domestic industry is suffering material injury cannot exist.

IV. M/s All India Federation of Rubber Footwear Manufacturers have made the following submissions:-

1. Designated Authority should decline to review the composition of domestic industry, product under consideration and also

- decline to recommend the continuance of anti dumping duty as Rule 23(3) does not empower DA to review composition of the domestic industry and the product under consideration.
2. Since applicability of Rule 2(b) is not contained under Rule 23(3), DA cannot review the definition of domestic industry. Since M/s SCL has not produced SBR since July, 99, the injury is on account of something else and not by dumping.
 3. M/s Apar Industries Ltd. and M/s Apcotex Lattices were not part of domestic industry in original petition before DA and nor do they manufacture all grades.
 4. Rule 23(3) does not empower DA to redefine the structure of domestic industry and the product under consideration.
 5. In response to the disclosure statement it has been mentioned that for SBR 1900 series a correct procedure should be a new petition and not a review. The other submissions already made have been reiterated.

In response to disclosure statement, M/s Banik Rubber Industries, Calcutta, have indicated that no conclusive evidence has been given by M/s Apar Limited and M/s Apcotex Lattices Ltd. that they produce SBR 1900 series or like article and that in such an event there could be no determination of dumping margin or injury.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

The authority notes that Para G(7) of the preliminary findings dt. 21.1.99 subsequently confirmed vide para E(9) of the Final Findings dt. 2.6.99 acknowledged M/s Synthetics and Chemicals Ltd. (SCL), M/s Apar Ltd. and M/s Apcotex Lattices as the producers of SBR. M/s SCL, the petitioner was acknowledged as accounting for more than 25% of the domestic production and thereby having the standing to file petition on behalf of the domestic industry under the Rules. The authority notes that subsequent to the closure of M/s SCL, which is the basis of the present review, M/s Apar Ltd and M/s Apcotex Lattices continue to be the two producers solely producing SBR 1900 series only. The authority notes, that though arguments have been made by interested parties regarding the redefinition of the domestic industry, the authority had acknowledged M/s Apar Ltd and M/s Apcotex Lattices as two producers of SBR in the previous investigations also. The authority notes that it has been its consistent practice to review and redefine the domestic industry at the stage of the review investigations. The authority during the review investigations in order to look at the aspect

of injury determination would necessarily have to look at the present status of the domestic industry as well. M/s Apar Ltd and M/s Apcotex Lattices would in the review investigations be the only domestic producers in the SBR 1900 series thereby constituting the domestic industry for this series of SBR only. However, there is no production of the SBR 1500 and 1700 series and, therefore, no domestic industry for these series.

The Authority in regards to the submission made regarding the goods manufactured by M/s Apar Limited and M/s Apcotex Lattices Limited notes that sufficient evidence has been provided by the domestic producers regarding their goods being of SBR 1900 series.

C) NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN

I. M/s Hyundai Petrochemical Co. Ltd. has made the following submissions:-

1. Hyundai produces only 1500 and 1700 series of SBR. The other manufacturer in Korea is M/s Korea Kumho which manufactures all the three series namely SBR 1500, 1700 and 1900. During the earlier POI, Hyundai did not produce/supply any SBR to India. The Authority has fixed higher landed value for us even though we did not export during POI. During the current period we have not exported a single Kg. of SBR 1700 series to India. Since the sole producer of SBR 1500 and 1700 series i.e. M/s SCL is closed, there is no justification whatsoever in continuance of the duties.

II. M/s Petkim Petrokimya Holding A.S., Turkey has made the following submissions :

1. The exporter has provided information pertaining to sales in home market with respect to Grade SBR 1502 in the POI viz. the factory cost and profit and the sales price structure for domestic sales. The exporter has provided details of exports of SBR 1502 grade made by them to India in the POI.

III. M/s Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA) has made the following submissions:-

1. The proposed arrangement with M/s Kolmar Petrochemicals is irrelevant to the issue as it is a development which has taken place

outside the review POI. The Agreement with M/s Kolmar cannot be subjected to the continuance of the duty as anti dumping duty is dependent on other factors such as normal value, export price, cost of production etc.

IV. M/s All India Federation of Rubber Footwear Manufacturers have made the following submissions:-

1. Any pre-condition for the so called revival plan of M/s SCL that anti dumping duties should continue is not permissible under the Law and cannot be used as a protective measure.
2. The domestic industry's statement that it is dumping which has led to erosion of capital and stoppage of production is unsubstantiated. The domestic industry should have approached the Designated Authority for imposition of duties earlier. In fact, domestic industry did approach the authority but no initiation was made by DA.

V) Importers have made the following submissions :-

1. M/s CEAT Limited, Mumbai have provided details of imports made in POI from the subject countries, i.e. Japan, Korea, Taiwan of the grades SBR 1502 and 1712.
2. M/s J K Industries, New Delhi have provided information as per the questionnaire indicating details of imports made from Turkey of grades of SBR 1712 and 1502 in the POI.
3. M/s MRF, Chennai, have provided information as per the questionnaire indicating details of imports made from USA, Korea, and Taiwan during POI of grades of SBR 1502 in the POI.
4. M/s Leo Rubbers, Kerala have provided information as per the questionnaire indicating details of imports made from Japan for SBR grades HS 860 and HS850, Brazil for grades 1502 and USA for grade 1904 in the POI.
5. M/s Paragon Rubber Industries, Kerala have provided information as per the questionnaire indicating details of imports made from Japan for SBR grade HS 860 and 850, from Korea for HS 860, HS 1502 from Brazil and 1904 from USA in the POI.

VI) M/s Synthetics and Chemicals Limited (SCL) have made the following submissions:-

1. M/s SCL is making efforts and incurring expenses towards the expansion of the capacity. However, all their efforts proved futile as it was noticed that dumping had been going on for the last several years in respect of SBR which had cascading effect thereby eroding our capital. As a result the production came to a halt somewhere in the month of July, 99.
2. Exporters cannot be allowed to dump goods merely because of temporary suspension of production by the domestic industry.
3. This is only a passing phase and it has to be appreciated and evaluated in the light of the bonafide steps which are being taken by the affected domestic industry to restart the production.
4. Determination of injury has been dealt with under Rule 11. The applicants who are seeking the review are not denying that the goods are being dumped in India. While the applicants admit dumping yet shelter is being sought by alleging that there can be no injury caused as there is no established industry carrying on production. This perception is legally misconceived.

VII) M/s Apar Ltd. and Apcotex Lattices Ltd. has made the following submissions:-

1. M/s Hyundai by its own admission has claimed that they do not produce SBR 1900 series and they cannot even make any comments on 1900 series.
2. The request to withdraw duties from 1900 series is without any legal basis. If the rubber and footwear manufacturers are suffering from dumping on their end product then they should request for imposition of anti dumping duty rather than requesting withdrawal of anti dumping duties on the raw materials.
3. There is continued dumping from Korea of SBR 1900 series. This has resulted in significantly low landed prices, severe price undercutting and under selling.

VIII) M/s Rishiroop Polymers Private Limited has made the following submissions:-

1. KKPC did not export any SBR falling under chapter 4002.19 during the review POI as well as original POI and have not caused any material injury to the domestic producer.
2. Based on the data from the balance sheet of M/s Apar Ltd. and M/s Apcotex Lattices the companies have reported profits in their

balance sheets. From the non confidential summary of the confidential submissions made by M/s Apar Ltd. and M/s Apcotex Lattices Ltd., it is noted that they have claimed that we have requested authority to withdraw anti dumping duty on SBR grades of 1500 and 1700 series which is not correct and that we have requested for withdrawal of anti dumping duty on all grades of SBR.

3. M/s Apcotex has mentioned that there exist significantly high capacities for SBR series with the subject countries. No evidence has been provided on this. This is not true with KKPC.
4. In response to the disclosure statement, M/s Rishiroop Polymers Private Limited on behalf of their principal M/s KKPC have mentioned that there were no exports of SBR 1900 series during the review POI as well as the original POI. In view of this, there is no causal link for any injury to the domestic industry. Therefore, the authority should hold that there is no need to calculate any dumping margin or to impose anti dumping duty on SBR 1900 series exports from KKPC which should be in line with the authority's decision for M/s Petkim Petrokimay Holding AS., Turkey.

IX) All India Rubber Industries Association has made the following submissions:

1. The anti dumping duty on imports of two series of SBR viz. 1500 and 1700 series from subject countries be withdrawn and whatever anti dumping duty has been collected from importers of the above series of SBR since July, '99 i.e. since the closure of the sole producer's plant should be refunded to the importers.

NORMAL VALUE, EXPORT PRICE & DUMPING MARGIN

The authority notes that only M/s Petkim Petrokimya Holding A.S., Turkey has responded to the questionnaire sent to them. M/s Rishiroop Polymers Ltd. on behalf of KKPC has mentioned that they have not exported SBR 1900 series during the review POI and also during the initial POI. None of the other exporters/producers have responded to the questionnaire. The authority also notes the present review has been initiated on the request from the importers/user industry that the sole producer of SBR 1500 and 1700 series has stopped production. As regards, SBR 1900 series, there has been no claim by any of the interested party that there are no domestic producers for this series of SBR in India. Also there is no response from

any of the exporters/producers on the information pertaining to dumping of SBR 1900 series except no export claim by M/s KKPC. The authority notes that since M/s KKPC has claimed no exports of SBR 1900 series in a review POI it may not be possible to review the dumping margin already determined in the previous investigation dated 2-6-99. The authority in view of this considers it appropriate to reference the dumping margins as already determined in the previous investigation for the SBR 1900 series. As regards, the SBR 1500 and 1700 series is concerned, the authority in view of the fact that there has been no domestic production of this series during the review period and consequently no domestic industry for these grades, and therefore it may not be appropriate to evaluate the dumping margins for these series/grades of SBR on the basis of the available response.

D) INJURY, CAUSAL LINK AND DETERMINATION OF INJURY

Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, ".....taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....". In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, we may consider such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II(iv) of the Rules supra.

I. M/s All India Federation of Rubber Footwear Manufacturers have made the following submissions:-

1. M/s Synthetics and Chemicals is not producing SBR since July, 99 and there is a shortage of main input to the user industry causing hardship to user industry. There is already dumping of finished rubber goods from subject countries. The anti dumping duties, therefore, may be withdrawn.

2. The plant of M/s SCL is lying closed Since April, 1999. Despite the existence of anti dumping duties which establishes the fact that it is on account of other factors and not on account of dumping.
3. Since the Plant is closed for the entire POI, legally it is the duty and right of Designated Authority to take cognizance of the fact whether any injury can be caused to the domestic industry that does not produce despite the existence of anti dumping duties.
4. It should be not presumed that the domestic industry would get hurt when it factually does not exist. Assessment of injury is not an academic exercise but DA has to look into real business issues. There is no provision under anti dumping laws to take cognizance of restructuring plans of M/s SCL.

II. M/s Automotive Tyre Manufacturers Association has made the following submissions :-

1. Rule 23(3) indicates that the provisions of Rule 11 among other rules shall be applicable in case of a review. It is to determine the existence of injury to the domestic industry. As there is no domestic industry of SBR for 1500 and 1700 series, therefore, the question of injury continuing or occurring if the duty is removed does not arise. There is no case for actual material injury, threat of material injury and material retardation to the establishment of a domestic industry. ATMA, therefore, requests the authority to recommend the immediate withdrawal of the anti dumping duty on SBR 1500 and 1700 series.
2. In response to the disclosure statement it has been submitted that authority has shown more indulgence towards the domestic industry by giving them an opportunity to commence production by end of May, 2001 which was uncalled for as the domestic industry is required to be examined only with reference to the period of review i.e. 1.7.99 to 30.6.2000.

III. M/s Apar Ltd. and Apcotex Lattices Ltd. has made the following submissions:-

1. It is factually incorrect that M/s Apar Industries Ltd. and M/s Apcotex Lattices did not participate in the previous investigations. Since M/s SCL constituted more than required proposition, DA did not

consider it appropriate to seek relevant information from the company.

2. In case DA undertakes to review the injury margin, then the dumping margin also requires to be reviewed.
3. The injury to domestic industry has rather intensified in the review period and there is a strong reason to increase the present duty levels.
4. With regard to SBR 1500 and 1700 interests, the strong and organized tyre industry in India is well aware of its own interests.
5. M/s Apar Ltd. and Apcotex Lattices participated in the final stage of hearing and also in the Preliminary stage.
6. We have provided costing information regarding imports from Poland and EU which clearly show that the profitability of the domestic industry has further deteriorated. The present investigations are a review of existing duty and, therefore, DA is not required to assess injury to the domestic industry in terms of performance of the domestic industry. DA is only required to merely re-determine injury margin.
7. With regard to increase in prices of the domestic industry, it is submitted that the costing information is on record with DA and which shows that the performance of the domestic industry has rather deteriorated.
8. M/s Apar Ltd. and M/s Apcotex Lattices have suffered injury on account of loss in profitability, price depression and undercutting, declining profit margins, piling up of stocks, sub-optimal capacity utilisation etc.
9. In response to the disclosure statement it has been reiterated that as provided under Section 9A(5), the Designated Authority is required to examine whether the discontinuation of the existing duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. The present investigation being a review in the event of re-determination of dumping, injury and causal link, Designated Authority is merely to re-determine the injury margin.
10. The duties may be recommended in \$ terms only.

IV) M/s Synthetics and Chemicals Ltd. (SCL) has made the following submissions:-

1. DA had come to the conclusion that the material injury to the domestic industry is from the imports from subject countries.
2. CEGAT upheld orders of DA vide its order dt. 2.2.00.

3. Withdrawal of anti dumping duty will lead to a situation wherein even after starting the production M/s SCL will not be able to sell at competitive prices resulting in stoppage of production leading to unemployment and loss of scarce foreign exchange on account of imports.
4. M/s SCL have filed an affidavit dt. 2.3.01 indicating a tolling arrangement with M/s Kolmar indicating that based on the situation then existing and subject to just exceptions they would be in a position to commence production by end of May, 2001. M/s SCL have also reported progress made in terms of their tolling arrangements acceptance by financial institutions/banks, receipt of support from UP Government and Labour Unions. The management has indicated that they recently faced problems which are beyond their control viz. three deaths amongst close relations of the management, an unfortunate fire in the factory, holidays in May-June month in the offices of the Government.
5. M/s SCL in response to disclosure statement have reiterated the fact that the injury has been caused to them by continued onslaught of dumping. They have further reiterated that theirs is an established industry with infrastructure and workforce in place and that under Rule 11 the authority has to look at the injury to the established industry. M/s SCL have further indicated the developments that have taken place with M/s Kolmar Petrochemicals, Germany, regarding tie up for tolling arrangement and also with the financial institution, ICICI, who have agreed to the said arrangement in principal. They have indicated that they would not be able to sell at a competitive price and will face closure if the anti-dumping duty is withdrawn. M/s SCL have further reiterated that it needs to be demonstrated that closure was not at all related to dumping if the anti-dumping duty is withdrawn. M/s SCL have requested for personal hearing to substantiate the matter further.

V) M/s Rishiroop Polymers Pvt. Ltd. has made the following submissions:-

1. Since at the time of original findings M/s Apar Ltd. and M/s Apcotex Lattices Ltd. did not give any data pertaining to SBR1900 series and did not submit themselves for injury assessment, no findings on injury has, therefore, been recorded or established at that point of time and, therefore, there is no justification for continuance of anti dumping duty on SBR 1900 series also. The intention to restart

- production by M/s SCL has no relevance as it pertains to post POI period. The original petition filed by M/s SCL has confined only to 4002.19 only.
2. The authority has not forwarded any data for the analysis of injury to the surviving producers of 1900 series.
 3. The production of M/s Apar Ltd. and M/s Apcotex Lattices Ltd. in review POI is much higher than 97-98. Their audited accounts show that Apcotex have not made losses.
 4. M/s Apcotex Lattices Ltd. has argued that authority is not required to assess injury in the review proceedings as per Section 9A(5). We do not agree with their views and should refer to Rule 23 (3) which clearly indicate that Rule 11 has to be applied to all review cases.
 5. In response to the disclosure statement it has been indicated that during the POI since imports of SBR from KKPC were zero, therefore, no causal link can be established for any injury finding.

VI) All India Rubber Industries Association has made the following submissions:-

1. The domestic supplies of SBR 1900 series is to an extent of 25% to 30% only of the annual requirement of the footwear industry.
2. The landed cost without anti dumping duty would also be higher than the domestic price thereby leading to no injury to the local producers.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

As regards M/s SCL's submission regarding the injury caused to them on account of dumping and that subsequent to their tie up with M/s Kolmar Petrochemicals, Germany, they would not be able to sell at competitive price, the authority notes that despite the existence of anti-dumping duty imposed after the initial investigations were notified on 21.1.99, M/s SCL has not been able to start production in its factory. Such a long spell of closure can certainly not be regarded as a temporary phenomenon. In case after going into commercial production, M/s SCL feels injury on account of dumping they may approach the authority for remedial action as per anti-dumping rules. However, the long spell of closure of the factory cannot be attributed to the phenomenon of dumping alone since adequate protection by way of anti-dumping duty on account of dumping has been provided to M/s SCL which has not led to any production of SBR.

As regards the SBR 1900 series, the following trends for production, capacity utilisation, domestic sales, Net Sales Realisation are noted for M/s Apar Limited and M/s Apcotex Lattices :-

- i) The production and domestic sales of M/s Apar Ltd. and M/s Apcotex Lattices Ltd. have increased in the POI as compared to 1998-99 as capacity of both these producers has increased.
- ii) The capacity utilisation for M/s Apar Ltd. has decreased in POI as compared to 1998-99 whereas that of Apcotex Lattices Ltd. has increased in POI as compared to 1998-99. The capacity utilisation during POI is 58.32%.
- iii) The selling price of both the producers at **Rs per kg. and *** Rs per kg. in POI continues to be lower than the Non-Injurious Price (NIP) as determined for these producers. The depressed Net Sales Realisation (NSR) of both the producers on account of low landed values from subject countries are result of price undercutting by dumped subject goods and have consequently led to financial loss to these two producers in the POI.
- iv) The removal of anti-dumping duties on SBR 1900 series from the subject countries would lead to material injury on account of price undercutting to the two producers.
- v) The Authority also notes that price depression in NSR has not been on account of demand of SBR 1900 which has increased from 7764 MT in 97 - 98 to 10674 MT in 98 - 99 and 15082 MT in POI .

LANDED VALUE

The landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the customs under Customs Tariff Act, 1962 and applicable level of custom duties except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9, 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

INDIAN INDUSTRY'S INTEREST AND OTHER ISSUES

The authority notes that the review has been initiated on the representation by the importer/user industry regarding non production of SBR 1500 and 1700 series by M/s Synthetics and chemicals Ltd. (SCL) in India. The authority has noted the contention of the user industry and has accordingly, considered the interest of the user industry vis-à-vis the 1500 and 1700 series of the subject goods which were not produced during the period of review. The authority, however, notes that the SBR 1900 series was still being produced in the country during the review period and is also still being produced. The authority has noted the argument made by various importers/user industries regarding the demand supply gap, the quality of product being produced by M/s Apar Ltd and M/s Apcotex Lattices, unjust enrichment of one producer, and closure of various manufacturing units as reported by the Rubber Board. The authority has also noted the submissions made regarding the prevailing price levels of the SBR 1900 series in India.

The authority recognizes that though the continuation of imposition of anti-dumping duty might affect the price levels of the products manufactured using the SBR 1900 series and consequently might have some influence relative competitiveness of these products, however, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures particularly when the objective of the levy of the anti-dumping duty is only to redress the injury caused due to dumping to the domestic industry and not to provide any generic protection to them. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices and would prevent the decline of the domestic industry and also help maintain availability of wider choice to the consumers of SBR 1900 series. Continuance of anti-dumping measures on SBR 1900 series would not restrict imports from the subject countries in any way and, therefore, would also not affect the availability of SBR 1900 series to the consumers.

FINAL FINDINGS

The authority concludes that:

- a) There has been no domestic production for the SBR 1500 and 1700 series and consequently there has been no domestic industry for these series during the period of review. Also the sole producer of these two series i.e. M/s SCL is still not in production. However, for the

other series i.e. SBR 1900, there are two producers viz. M/s Apar Ltd. and M/s Apcotex Lattices Ltd. who for SBR 1900 series constitute the domestic industry as indicted in foregoing para. The authority has evaluated injury and its continuance of SBR 1900 series to these two domestic producers.

- b) M/s SCL has not produced in the Period of Investigation of the present review. There is, therefore, no production of SBR 1500 and 1700 series in the country and accordingly no domestic producers and domestic industry.
- c) None of the exporters/producers from the subject countries have responded on the dumping of SBR 1900 series. The dumping margin as already determined in Final Findings are thereby reconfirmed keeping in view the purpose and scope of the present review.
- d) M/s Apar Ltd. and M/s Apcotex Lattices the domestic industry for SBR 1900 series during the review period of investigation have faced injury due to continued dumping of SBR 1900 series.
- e) The authority recognizes the need for continuation of imposition of definitive anti dumping duty on all imports of SBR falling under Chapter 40, customs Head 4002.19 and Chapter 39 Customs Head 3903.90 originating in or exported from the subject countries as already notified vide customs notification no. 73/2000-Customs dt. 22.5.2000.
- f) The landed value on imports for the purposes shall be assessable value as determined by the customs under the custom Head 1962 and all duties of customs except duty levied under Section 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.
- g) Accordingly it is proposed that anti-dumping duties as set out in Customs Notification NO. 73/2000-Customs dt. 22.5.2000 be continued to be imposed on SBR 1900 series only while the anti dumping duties as set out in this notification on SBR 1500 and 1700 series are discontinued.

Accordingly, it is proposed that anti-dumping duties as set out below be imposed by the Central Government on all imports of all grades of SBR 1900 Series viz. high styrene resin masterbatch originating in or exported from Japan, Korea, USA, Turkey and Taiwan falling under Chapter 39 and 40, Customs sub-heading 3903.90 and 4002.19 of the Customs Tariff Act, respectively.

Sl.No. (1)	Country (2)	Name of the Producer or Exporter (3)	Grade (4)	Amount (US \$ per metric tonne) (5)
1.	United States of America	All Exporters	1900 Series	189.89
2.	Taiwan	Taiwan Synthetic Rubber Corporation	1900 Series	90.00
		Others	1900 Series	90.00
3.	Turkey	Petkim Petrokimya	1900 Series	272.99
		Others	1900 Series	272.99
4.	Korea	Korea Kumho	1900 Series	204.00
		Other Exporters	1900 Series	204.00
5.	Japan	JSR Corporation	1900 Series	156.93
		Others	1900 Series	156.93

An appeal against this order shall lie to the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act Supra.

L. V. SAPTHARISHI, Designated Authority and Addl. Secy.

